2020

शनि उपाय पुस्तिका

शनि की पौराणिक कथाएं, माहात्म्य, सुंदरकाण्ड एवं हनुमान चालीसा

फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्रकाशित

संपादक : डा: अरुण बंसल
लेखक : विनय गर्ग

शनि उपाय पुस्तिका

फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्रकाशित

संपादक : डॉ. अरुण बंसल, लेखक : विनय गर्ग

विषय सूची

गणपति वंदना

ॐ गं गणपतये नमः।।

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

एकदन्तं महाकायं लम्बोदरगजाननम्।
विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणाम्यहम्।।

वन्दहुँ विनायक, विधि-विधायक, ऋद्धि-सिद्धि प्रदायकम्।
गजकर्ण, लम्बोदर, गजानन, वक्रतुण्ड, सुनायकम्।।

श्री एकदन्त, विकट, उमासुत, भालचन्द्र भजामिहम।
विघ्नेश, सुख-लाभेश, गणपति, श्री गणेश नमामिहम।।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्हिताय्।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

सर्वोपयोगी मंत्र

नवग्रह मंत्र

सूर्य : तांत्रिक मंत्र – ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः
लघु मंत्र – ॐ घृणि सूर्याय नमः

चंद्र : तांत्रिक मंत्र – ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः
लघु मंत्र – ॐ सों सोमाय नमः

मंगल : तांत्रिक मंत्र – ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः
लघु मंत्र – ॐ अं अंगारकाय नमः

बुध : तांत्रिक मंत्र – ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः
लघु मंत्र – ॐ बुं बुधाय नमः

गुरु : तांत्रिक मंत्र – ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः
लघु मंत्र – ॐ बृं बृहस्पतये नमः

शुक्र : तांत्रिक मंत्र – ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः
लघु मंत्र – ॐ शुं शुक्राय नमः

शनि : तांत्रिक मंत्र – ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः
लघु मंत्र – ॐ शं शनैश्चराय नमः

राहु : तांत्रिक मंत्र – ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहुवे नमः
लघु मंत्र – ॐ रां राहुवे नमः

केतु : तांत्रिक मंत्र – ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः
लघु मंत्र – ॐ कें केतवे नमः

श्री हनुमत् बीज मंत्र

ॐ हं हनुमतये नमः।।

श्री गणेश मंत्र

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

गणेश गायत्री मंत्र

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

सरस्वती मंत्र (बुद्धि, कला, अर्न्तज्ञान, ज्ञान हेतु)

ॐ ऐं महासरस्वत्यै नमः।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वाग्देव्यै सरस्वत्यै नमः।।

ॐ अर्हं मुख कमल वासिनी पापात्म क्षयम्कारी
वद वद वाग्वादिनी सरस्वती ऐं ह्रीं नमः स्वाहा।।

श्री सरस्वती पुराणोक्त मंत्र

या देवी सर्वभूतेषु विद्यारुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

परीक्षा भय निवारण मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वीणा पुस्तक धारिणीम् मम् भय निवारय निवारय
अभयं देहि देहि स्वाहा।

स्मृति नियंत्रण मंत्र

ॐ ऐं स्मृत्यै नमः।

श्री महालक्ष्मी बीज मंत्र

ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।।

श्री ललिता त्रिपुर सुंदरी बीज मंत्र

ॐ श्री श्री ललिता महात्रिपुरसुन्दर्यै श्री महालक्ष्म्यै नमः।।

श्री महालक्ष्मी महामंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

श्री महालक्ष्मी गायत्री मंत्र

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।

श्री महालक्ष्मी पुराणोक्त मंत्र

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

सर्वविध कष्ट निवारण हेतु देवी मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

सुलक्षणा पत्नी प्राप्ति के लिए मंत्र

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।

वर प्राप्ति के लिए मंत्र

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि!
नन्दगोपसुतं देवं पतिं मे कुरु ते नमः।।

पुत्र प्राप्ति हेतु संतान गोपाल मंत्र

ॐ देवकीसुतगोविंद वासुदेवजगत्पते।

देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।

वशीकरण के लिए मंत्र

महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।।

आकर्षण के लिए मंत्र

ॐ क्लीं ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।

कल्याण के लिए मंत्र

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।

शक्ति प्राप्ति हेतु मंत्र

सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।

भय निवारण हेतु मंत्र

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

सुरक्षा प्राप्ति हेतु मंत्र

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।

स्वास्थ्य और भाग्य हेतु मंत्र

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

बाधाओं से मुक्ति पाने के लिए मंत्र

सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन् भविष्यति न संशयः।।

शनि वैदिक मंत्र

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।

पौराणिक शनि मंत्र

नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

शिव गायत्री मंत्र

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

रोग नाश के लिए महामृत्युंजय मंत्र

ॐ त्र्यंम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्,
उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

विशेष प्रभावशाली षडप्रणवयुक्तमहामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यंम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।।

मृत संजीवनी मंत्र

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यंम्बकं यजामहे भर्गो देवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् धियो यो नः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।।

बगलामुखी ध्यान मंत्र

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीम्, वामेन शत्रून परि-पीडयन्तीम्।
गदाऽभिघातेन च दक्षिणेन, पीताम्बराढ्यां द्वि-भुजां नमामि।।

बगलामुखी मंत्र

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ।
जिह्वाम् कीलय कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।।

नवग्रह प्रार्थना मंत्र

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।

मुकदमे में विजय हेतु बटुक भैरव मंत्र

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।

कालसर्प मंत्र

ॐ क्रौं नमोऽस्तु सर्पेभ्यो कालसर्प शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा। ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नम्।।
ॐ सर्पेभ्यो नमः।।

शत्रुओं द्वारा कृत प्रयोगों का निष्फलीकरण

ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा।।

शनि परिचय

कौन है शनिदेव ?

सूर्य पुत्र शनिदेव अति शक्तिशाली माने जाते हैं और इनका इंसान के जीवन में अद्भुत महत्व है। शनिदेव मृत्युलोक के ऐसे स्वामी हैं, जो व्यक्ति के अच्छे-बुरे कर्मों के आधार पर सजा देकर उन्हें सुधरने के लिए प्रेरित करते हैं। आमतौर पर यह धारणा है कि शनिदेव मनुष्यों के शत्रु हैं। यह भी मान्यता है कि क्लेश, दुःख, पीड़ा, व्यथा, व्यसन, पराभव आदि शनि की साढ़ेसाती के कारण पैदा होता है।

लेकिन सच्चाई यह भी है कि शनिदेव उन्हीं को दंडित करते हैं, जो बुरा करते हैं अर्थात जो जैसा करेगा, वो वैसा भरेगा। उनके नियमों के अनुसार अगर हमने कुछ स्वार्थवश गलत किया है तो वह उसका फल फौरन देता है। विद्वानों के मतानुसार शनि मोक्ष प्रदाता ग्रह है और शनि ही शुभ ग्रहों से कहीं अधिक अच्छा फल देता है। शनिदेव के प्रति लोगों में जो डर है, उसी के कारण वे दुर्व्यवहार करने से बचते भी हैं। सच्चाई तो यह है कि अगर हम कोई दुर्व्यवहार ही न करें, तो शनिदेव हमारे मित्र हैं।

ऐसी मान्यता है कि चोरी, डकैती, व्यभिचार, परस्त्रीगमन, दुर्व्यसन तथा झूठ से जीवन-यापन नहीं करना चाहिए। यदि कोई जातक झूठे रास्ते पर चला गया है तो शनि उसे तकलीफ देते हैं अन्यथा परम संतुष्ट होकर पहले से अधिक संपत्ति, यश, कीर्ति, वैभव प्रदान करते हैं।

शनि ग्रह की शांति हेतु हमारे पौराणिक शास्त्रों में अनेक विधियां बताई गई हैं, जिनमें प्रमुख रूप से रुद्राभिषेक व हनुमानजी की सेवा, हवन आदि शामिल हैं।

क्या है शनि ग्रह ?

शनि एक ग्रह है और शनि एक देव भी हैं। हम यहां देव की बात नहीं ग्रह की बात कर रहे हैं। सूर्य और चंद्र की तरह प्रत्येक ग्रह उदय और अस्त होता है। हमें वह आसमान में दिखाई देता है। कुछ लोग उसे पहचानते हैं और कुछ नहीं।

जिस तरह सूरज और चंद्र का प्रभाव धरती पर पड़ता है उसी तरह अन्य ग्रहों

का प्रभाव भी पड़ता है। जिस तरह चंद्र के प्रभाव से धरती के प्रत्येक भाग का जल प्रभावित होता है फिर चाहे वह जल समुद्र में हो या मानव पेट में, उसी तरह शनि का प्रभाव धरती के प्रत्येक लौह तत्व पर होता है। हमारे शरीर में भी लौह तत्व होता है।

शनि के बुरे प्रभाव के चलते दांत, बाल और हड्डियां समय पूर्व ही कमजोर होने लगती है। पेट के रोग उत्पन्न हो जाते हैं और दिमाग की खराबियां भी होने लगती है। व्यक्तिमें क्रोध भी बढ़ जाता है। गृह कलह उत्पन्न होने लगता है।

शनि प्रधान व्यक्ति के गुण

शनि प्रधान व्यक्तिजीरो से स्टार्ट करता है और अत्यधिक संघर्ष के बाद आगे पहुंचता है। इस व्यक्ति के पास सब कुछ हो सकता है, जैसे संपूर्ण परिवार, माता-पिता, पत्नी, बेटे-बेटी जो लोगों को दिखाई देते हैं, पर वास्तव में वह अंदर से बहुत ही अकेला होता है, क्योंकि शनि छल-कपटी रिश्तों को सामने ला-लाकर उसे आत्मज्ञानी एवं एकांतवासी बनाते हुए संसार का ज्ञान कराते हुए सन्मार्ग पर ईश्वर की ओर ले जाता है।

यदि यह ग्रह अधिक खराब हो तो भौतिक सुखों का भी अनुभव नहीं होने देता है। यह जातक कर्मवादी होता है। संघर्ष और सफलता साथ-साथ चलती है। ऐसे जातक को अंदरुनी चोट लगती है, जैसे यह ऊंचाई से गिरेगा या सड़क पर दुर्घटना होगी तो हड्डी टूटने और खून बहने जैसी स्थिति नहीं बनाएगा। लेकिन अंदरुनी चोट लगेगी, जो कई दिनों तक जातक को दर्द देगी, जैसे मोच आ जाना, पैर में पट्ठा लगना, मसल्स क्रेक हो जाना आदि।

शनि प्रधान व्यक्तिको देखा गया है कि वह संन्यासियों की तरह जीवन जीना प्रारंभ कर देता है या तो वह विवाह पश्चात परिवार छोड़ देता है या विवाहपूर्व ही संन्यासी हो जाता है और कुछ जातक घर में ही सबके बीच अकेले हो जाते हैं। शनि न्यायकारक ग्रह है अतः न्याय के लिए लड़ने वाले लोगों में शनि जागा हुआ होता है।

ऐसे जातक का भाग्य उदय 35 वर्ष की उम्र में होता है। ऐसे जातक को बचपन में पैर में चोट लगना, लचक कर चलना या कोई कमी की संभावना रहती है।

शनि यदि कुंडली में शुभ है तो जातक 35 वर्ष से दौलत-शोहरत प्राप्त करता है और यह सब कुछ उसकी मेहनत से ही प्राप्त होता है। ऐसे जातक का कोई गॉडफादर नहीं होता है। ये या तो बोलते नहीं और बोलते हैं तो कटु सत्य बोलते हैं। फिर चाहे किसी को मधुर लगे या कड़वा।

शनि के अशुभ फल

यदि आप बेशुमार कर्ज, कर्ज अदायगी में चूक, नौकरी-धंधे में किसी भी प्रकार का व्यवधान आना, नौकरी छूट जाना, अनचाही जगह तबादला हो जाना, पदोन्नति में आने वाली बाधाएं, व्यापार-व्यवसाय में मंदी का सामना करना, घाटा-दिवाला निकलना आदि की स्थिति से परेशान हैं और अगर ऐसे लक्षण आपको भी दिखाई दे रहे हैं, तो इसका मतलब आपको शनि के अशुभ फल मिल रहे हैं।

अतः शनि के अशुभ होने को इन प्रमुख लक्षणों से जाना जा सकता है। आपके लिए 7 विशेष ऐसे लक्षण जिससे आदमी परेशान हो जाता है।

- सट्टे/जुए का शौक आदत बन जाए।
- नशा करने का शौक लत बनने की ओर अग्रसर हो, व्यसन का रूप ग्रहण करें।
- भाइयों में बड़ा विवाद/दुश्मनी हो रही है तब भी शनि का अशुभ प्रभाव मानना चाहिए।
- अशुभ शनि अवैध एवं अनैतिक संबंध की राह दिखाता है।
- अनावश्यक झूठ बोलने का स्वभाव अशुभ शनि का प्रमुख लक्षण है।
- शाकाहारी व्यक्तिकी मांसाहार की ओर प्रवृत्ति।
- जमीन, प्लाट, मकान के संबंध में समस्या एवं विवाद।

शनि ग्रह के लक्षण

जिस ग्रह की दशा के प्रभाव में हम होते हैं, उसकी स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल हमें मिलता है। जब भी कोई ग्रह अपना शुभ या अशुभ फल प्रबल रूप में देने वाला होता है, तो वह कुछ संकेत पहले से ही देने लगता है। इनके उपाय कर समस्याओं से बचा जा सकता है। आइए जानें...

- शनि के अशुभ होने के पूर्व संकेत दिन में नींद सताने लगती है।
- अकस्मात ही किसी अपाहिज या अत्यंत निर्धन और गंदे व्यक्ति से वाद-विवाद हो जाता है।
- मकान का कोई हिस्सा गिर जाता है।
- लोहे से चोट आदि का आघात लगता है।
- पालतू काला जानवर जैसे काला कुत्ता, काली गाय, काली भैंस, काली बकरी या काला मुर्गा आदि मर जाता है।
- निम्न स्तरीय कार्य करने वाले व्यक्ति से झगड़ा या तनाव होता है।
- व्यक्ति के हाथ से तेल फैल जाता है।
- व्यक्ति के दाढ़ी-मूंछ एवं बाल बड़े हो जाते हैं।
- कपड़ों पर कोई गंदा पदार्थ गिरता है या धब्बा लगता है या साफ-सुथरे कपड़े पहनने की जगह गंदे वस्त्र पहनने की स्थिति बनती है।
- अंधेरे, गंदे एवं घुटनभरी जगह में जाने का अवसर मिलता है।
- शनि के अशुभ प्रभाव के कारण मकान या मकान का हिस्सा गिर जाता है या क्षतिग्रस्त हो जाता है।
- कर्ज या लड़ाई-झगड़े के कारण मकान बिक जाता है।
- अंगों के बाल तेजी से झड़ जाते हैं।
- अचानक घर या दुकान में आग लग सकती है।
- धन, संपत्ति का किसी भी तरह से नाश होता है।
- समय पूर्व दांत और आंख की कमजोरी।
- व्यक्ति पराई स्त्री से संबंध रखकर बर्बाद हो जाता है।
- व्यक्ति जुआ, सट्टा आदि खेल कर बर्बाद हो जाता है।
- व्यक्ति किसी भी मुकदमे में जेल जा सकता है।
- व्यक्ति की मानसिक स्थिति बिगड़ सकती है। वह पागल भी हो सकता है।
- व्यक्ति अत्यधिक शराब पीने का आदी होकर मौत के करीब पहुंच जाता है।
- व्यक्ति किसी भी गंभीर रोग का शिकार होकर अस्पताल में भर्ती हो सकता है।

- भयानक दुर्घटना में व्यक्ति अपंग हो सकता है या मर भी सकता है।

नोट : उपरोक्त स्थिति निर्भर करती है शनि ग्रह की कुंडली में स्थिति और व्यक्ति के कर्मो अनुसार।

शनि ग्रह के शुभ लक्षण

- शनि की स्थिति यदि शुभ है तो व्यक्ति हर क्षेत्र में प्रगति करता है।
- शनि के शुभ होने पर व्यक्ति के जीवन में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता।
- बाल और नाखून मजबूत होते हैं।
- ऐसा व्यक्ति न्यायप्रिय होता है और समाज में खूब मान-सम्मान पाता है।
- मकान और दलाली के कार्यो में सफलता मिलती है।
- व्यक्ति भूमि का मालिक होता है और धन संपन्न रहता है।
- यदि व्यक्ति लोहे से संबंधित कोई कार्य कर रहा है तो उसमें उसे अपार धन मिलता है।

शनि की पूजन विधि

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार यह मान्यता है कि शनिदोष से मुक्ति पाने के लिए मूल नक्षत्रयुक्त शनिवार से आरंभ करके 7 शनिवार शनिदेव की पूजा करनी चाहिए और व्रत रखने चाहिए। ऐसा करने से शनिदेव की कृपा बनी रहती है।

- व्रत के लिए शनिवार को प्रातःकाल उठकर स्नान करना चाहिए।
- तत्पश्चात भगवान हनुमान व शनिदेव की आराधना करते हुए तिल व लौंगयुक्त जल पीपल के पेड़ पर चढ़ाना चाहिए।
- इसके बाद शनिदेव की प्रतिमा के समीप बैठ कर उनका ध्यान लगाते हुए मंत्रोच्चारण करना चाहिए।
- पूजा करने के बाद काले वस्त्र, काली वस्तुएं किसी गरीब को दान करनी चाहिए।
- अंतिम व्रत को शनिदेव की पूजा के साथ-साथ हवन भी करवाना चाहिए।

शनि की महत्वपूर्ण कथाएं

शनिदेव की उत्पति कथा (पौराणिक)

जनसामान्य में फैली मान्यता के अनुसार नवग्रह परिवार में सूर्य राजा व शनिदेव भृत्य हैं लेकिन महर्षि कश्यप ने शनि स्तोत्र के एक मंत्र में सूर्य पुत्र शनिदेव को महाबली और ग्रहों का राजा कहा है- 'सौरिग्रहराजो महाबलः।

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार शनिदेव ने शिव भगवान की भक्तिव तपस्या से नवग्रहों में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया है। एक समय सूर्यदेव जब गर्भाधान के लिए अपनी पत्नी छाया के समीप गए तो छाया ने सूर्य के प्रचंड तेज से भयभीत होकर अपनी आंखें बंद कर ली थीं। कालांतर में छाया के गर्भ से शनिदेव का जन्म हुआ। शनि के श्याम वर्ण (काले रंग) को देखकर सूर्य ने अपनी पत्नी छाया पर यह आरोप लगाया कि शनि मेरा पुत्र नहीं है तभी से शनि अपने पिता सूर्य से शत्रुता रखते हैं।

शनिदेव ने अनेक वर्षों तक भूखे-प्यासे रहकर शिव आराधना की तथा घोर तपस्या से अपनी देह को दग्ध कर लिया था, तब शनिदेव की भक्तिसे प्रसन्न होकर शिवजी ने शनिदेव से वरदान मांगने को कहा। शनिदेव ने प्रार्थना की- युगों-युगों से मेरी मां छाया की पराजय होती रही है, उसे मेरे पिता सूर्य द्वारा बहुत अपमानित व प्रताड़ित किया गया है इसलिए मेरी माता की इच्छा है कि मैं (शनिदेव) अपने पिता से भी ज्यादा शक्तिशाली व पूज्य बनूं।

तब भगवान शिवजी ने उन्हें वरदान देते हुए कहा कि नवग्रहों में तुम्हारा स्थान सर्वश्रेष्ठ रहेगा। तुम पृथ्वी लोक के न्यायाधीश व दंडाधिकारी रहोगे। साधारण मानव तो क्या- देवता, असुर, सिद्ध, विद्याधर और नाग भी तुम्हारे नाम से भयभीत रहेंगे। ग्रंथों के अनुसार शनिदेव कश्यप गोत्रीय हैं तथा सौराष्ट्र उनका जन्मस्थल माना जाता है।

शनि ग्रह की उत्पत्ति कथा (अन्य)

महर्षि कश्यप का विवाह प्रजापति दक्ष की कन्या अदिति से हुआ जिसके गर्भ से विवस्वान (सूर्य) का जन्म हुआ। सूर्य का विवाह त्वष्टा की पुत्री संज्ञा से हुआ। सूर्य व संज्ञा के संयोग से वैवस्वत मनु व यम दो पुत्र तथा यमुना नाम की कन्या का जन्म हुआ। संज्ञा अपने पति के अमित तेज से संतप्त रहती थी। सूर्य के तेज को अधिक समय तक सहन न कर पाने पर उसने अपनी छाया को अपने ही समान बना कर सूर्य के पास छोड़ दिया और स्वयं पिता के घर आ गई। पिता त्वष्टा को यह व्यवहार उचित नहीं लगा और उन्होंने संज्ञा को पुनः सूर्य के पास जाने का आदेश दिया। संज्ञा ने पिता के आदेश की अवहेलना की और घोड़ी का रूप बना कर कुरु प्रदेश के वनों में जा कर रहने लगी।

इधर सूर्य संज्ञा की छाया को ही संज्ञा समझते रहे। कालान्तर में संज्ञा के गर्भ से भी सावर्णि मनु और शनि दो पुत्रों का जन्म हुआ। छाया शनि से बहुत स्नेह करती थी और संज्ञा पुत्र वैवस्वत मनु व यम से कम। एक बार बालक यम ने खेल-खेल में छाया को अपना चरण दिखाया तो उसे क्रोध आ गया और उसने यम को चरण हीन होने का शाप दे दिया। बालक यम ने डर कर पिता को इस विषय में बताया तो उन्होंने शाप का परिहार बता दिया और छाया संज्ञा से बालकों के बीच भेदभावपूर्ण व्यवहार करने का कारण पूछा। सूर्य के भय से छाया संज्ञा ने सम्पूर्ण सत्य प्रकट कर दिया।

संज्ञा के इस व्यवहार से क्रोधित होकर सूर्य अपनी ससुराल में गए। ससुर त्वष्टा ने समझा बुझा कर अपने दामाद को शांत किया और कहा, हे आदित्य! आपका तेज सहन न कर सकने के कारण ही संज्ञा ने यह अपराध किया है और घोड़ी के रूप में वन में भ्रमण कर रही है। आप उसके इस अपराध को क्षमा करें और मुझे अनुमति दें कि मैं आपके तेज को काट-छांट कर सहनीय व मनोहर बना दूं। अनुमति मिलने पर त्वष्टा ने सूर्य के तेज को काट-छांट दिया और विश्वकर्मा ने उस छीलन से भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र का निर्माण

किया। मनोहर रूप हो जाने पर सूर्य संज्ञा को लेकर अपने स्थान पर आ गए। बाद में संज्ञा ने नासत्य और दस्र नामक अश्वनी कुमारों को जन्म दिया। यम की घोर तपस्या से प्रसन्न हो कर महादेव ने उन्हें पितरों का आधिपत्य दिया और धर्म अधर्म के निर्णय करने का अधिकारी बनाया। यमुना व ताप्ती नदी के रूप में प्रवाहित हुई। शनि को नवग्रह मंडल में स्थान दिया गया।

रोचक कथाएं

पहली कथा - शनि और हनुमान जी का संबंध

एक बार महावीर हनुमान श्री राम के किसी कार्य में व्यस्त थे। उस जगह से शनिदेव जी गुजर रहे थे। रास्ते में उन्हें हनुमानजी दिखाई पड़े। अपने स्वभाव की वजह से शनिदेव जी को शरारत सूझी और वे उस राम कार्य में विघ्न डालने हनुमान जी के पास पंहुच गए। हनुमानजी ने शनि देव को चेतावनी दी और उन्हें ऐसा करने से रोका पर शनिदेव नहीं माने। हनुमानजी ने तब शनिदेव जी को अपनी पूंछ से जकड लिया और फिर से राम कार्य करने लगे। कार्य के दौरान वे इधर-उधर चहलकदमी भी कर रहे थे। अतः शनिदेवजी को बहुत सारी चोटें आई। शनिदेव ने बहुत प्रयास किया पर हनुमान जी की कैद से खुद को छुड़ा नहीं पाए। उन्होंने विनती की पर हनुमानजी अपने कार्य में खोये हुए थे।

जब राम जी का कार्य खत्म हुआ तब उन्हें शनिदेवजी का ख्याल आया और तब उन्होंने शनिदेव को आजाद किया। शनिदेव जी को अपनी भूल का अहसास हुआ और उन्होंने हनुमानजी से माफी मांगी कि वे कभी भी राम और हनुमान जी के कार्यों में कोई विघ्न नहीं डालेंगे और श्री राम और हनुमान जी के भक्तों को उनका विशेष आशीष प्राप्त होगा।

दूसरी कथा

शनिदेव जी ने भगवान श्री हनुमान से सरसों का तेल मांगा जिसे वह अपने घावों पर लगा सके और जल्द ही चोटों से उभर सकें। हनुमानजी ने उन्हें वो

तेल उपलब्ध करवाया और इस तरह शनिदेव के जख्म ठीक हुए। तब शनिदेव जी ने कहा की इस स्मृति में जो भी भक्तशनिवार के दिन मुझ पर सरसों का तेल चढ़ाएगा उसे मेरा विशेष आशीष प्राप्त होगा।

तीसरी कथा

एक कथा के अनुसार अहंकारी लंकापति रावण ने शनिदेव जी को कैद कर लिया और उन्हें लंका में एक जेल में डाल दिया। जब तक हनुमानजी लंका नहीं पंहुचे तब तक शनिदेव उसी जेल में कैद रहे।

जब हनुमान सीता मैया की खोज में लंका में आए तब मां जानकी को खोजते-खोजते उन्हें भगवान शनि देव जेल में कैद मिले। हनुमानजी ने तब शनि भगवान को आजाद करवाया। आजादी के बाद उन्होंने हनुमानजी को धन्यवाद दिया और उनके भक्तों पर विशेष कृपा बनाए रखने का वचन दिया।

चौथी कथा - शनि की न्यायप्रियता

एक बार भगवान विष्णु, शंकर और ब्रह्मा के बीच एक संवाद शुरू हुआ। यह संवाद था संसार में एक न्याय अधिकारी को जन्म देने का। यह संवाद तब शुरू हुआ जब देवों और असुरों के बीच लगातार युद्ध हो रहा था। असुरों को लगता था कि जब न्याय की बात आती है तो फैसला देवों के हक में सुनाया जाता है। परंतु असुरों के गुरु शुक्राचार्य को भगवान शंकर पर पूर्ण विश्वास था कि वह देवों के साथ असुरों के हितों की भी रक्षा करेंगे।

भगवान शंकर ने अपने परम भक्तशुक्राचार्य को निराश नहीं किया। भगवान् शंकर ही थे जिन्होंने शनिदेव के जन्म की पटकथा लिखी।

शनिदेव का जन्म सूर्य पुत्र के रूप में हुआ जिनकी मां का नाम छाया था। एक पौराणिक कथा के अनुसार छाया ने शनि को एक जंगल में छुपा के रख उनका वहीं पालन-पोषण किया। यम के अलावा शनि भी एक पुत्र है। शनि देव को भी नहीं मालूम था कि उनके पिता स्वयं सूर्य देव हैं।

लेकिन यह राज बहुत दिनों तक छुप ना सका। क्योंकि संसार को उसका न्याय अधिकारी मिलना था जो कर्मों के आधार पर लोगों को न्याय और दंड देगा। इधर देवाधिपति इंद्र देव और शुक्राचार्य के बीच न्याय अधिकारी के अस्तित्व को जानने के लिए खलबली मची हुई थी। इसी खलबली का नतीजा एक चक्रवात के रूप में आया जिसका संचालन शुक्राचार्य कर रहे थे।

शुक्राचार्य को मोहरा बनाते हुए इंद्र देव ने एक षड्यंत्र रचा था। सही मायनों में इस चक्रवात के लिए इंद्र देव जिम्मेदार थे जिन्होंने असुरों के गुरु शुक्राचार्य को उकसाया। इस चक्रवात की चपेट में शनि की माता छाया आ गई जिससे शनि देव नाराज हो गए और शंकर भगवान की कृपा से उन्हें अपनी शक्तियों का बोध हो गया और उन्होंने अपनी मां छाया को बचा लिया।

उसके बाद सूर्य देव चक्रवात से क्रोधित हो गए और उन्होंने शुक्राचार्य और इंद्र देव को सूर्य लोक में बुलाया। जहां पर चक्रवात के दोषी को दंड दे कर न्याय दिया जाना था। लेकिन शुक्राचार्य की बात सुने बिना सूर्यदेव ने शुक्राचार्य को दोषी करार दे दिया इसको देखते हुए वहां शनि देव प्रकट हो गए उन्होंने न्याय अधिकारी के रूप में उचित न्याय किया।

उन्होंने सभी को बताया कि चक्रवात के असली दोषी शुक्राचार्य नहीं अपितु इंद्रदेव हैं। शनिदेव की यह बात सुनकर वहां मौजूद सभी देवता (उनके पिता सूर्यदेव) और शुक्राचार्य चकित रह गए। लेकिन शनिदेव ने कहा कि न्याय सबके लिए बराबर होता है चाहे वह देव हो या असुर। अंत में देवताओं को शनि देव के आगे झुकना ही पड़ा क्योंकि न्याय विश्व के न्याय अधिकारी के द्वारा हो रहा था। इंद्र देव को सजा के तौर पर अपना मुकुट धरती पर उतार कर रखना पड़ा।

पांचवीं कथा - शनि के आगे भगवान शिव की हार

पौराणिक कथा के अनुसार एक समय शनि देव भगवान शंकर के धाम हिमालय पहुंचे। उन्होंने अपने गुरुदेव भगवान शंकर को प्रणाम कर उनसे आग्रह किया, 'हे प्रभु! मैं कल आपकी राशि में आने वाला हूं अर्थात मेरी वक्र दृष्टि आप पर पड़ने वाली है।

शनिदेव की बात सुनकर भगवान शंकर हतप्रभ रह गए और बोले, 'हे शनिदेव! आप कितने समय तक अपनी वक्र दृष्टि मुझ पर रखेंगे। शनिदेव बोले, 'हे नाथ! कल सवा प्रहर के लिए आप पर मेरी वक्र दृष्टि रहेगी। शनिदेव की बात सुनकर भगवन शंकर चिंतित हो गए और शनि की वक्र दृष्टि से बचने के लिए उपाय सोचने लगे।

शनि की दृष्टि से बचने हेतु अगले दिन भगवन शंकर मृत्युलोक आए। भगवान शंकर ने शनिदेव और उनकी वक्र दृष्टि से बचने के लिए एक हाथी का रूप धारण कर लिया। भगवान शंकर को हाथी के रूप में सवा प्रहर तक का समय व्यतीत करना पड़ा तथा शाम होने पर भगवान शंकर ने सोचा, अब दिन बीत चुका है और शनिदेव की दृष्टि का भी उन पर कोई असर नहीं होगा। इसके उपरांत भगवान शंकर पुनः कैलाश पर्वत लौट आए।

भगवान शंकर प्रसन्न मुद्रा में जैसे ही कैलाश पर्वत पर पहुंचे उन्होंने शनिदेव को उनका इंतजार करते पाया। भगवान शंकर को देख कर शनिदेव ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। भगवान शंकर मुस्कराकर शनिदेव से बोले, 'आपकी दृष्टि का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ।

यह सुनकर शनि देव मुस्कराए और बोले, 'मेरी दृष्टि से न तो देव बच सकते हैं और न ही दानव यहां तक कि आप भी मेरी दृष्टि से बच नहीं पाए। यह सुनकर भगवान शंकर आश्चर्यचकित रह गए। शनिदेव ने कहा, मेरी ही दृष्टि के कारण आपको सवा प्रहर के लिए देव योनी को छोड़कर पशु योनी में जाना पड़ा। इस प्रकार मेरी वक्र दृष्टि आप पर पड़ गई और आप इसके पात्र बन गए। शनि देव की न्यायप्रियता देखकर भगवान शंकर प्रसन्न हो गए और शनिदेव को हृदय से लगा लिया।

छठी कथा – शनि की पत्नी का शाप

शनि, भगवान सूर्य तथा छाया के पुत्र हैं। इनकी दृष्टि में जो क्रूरता है, वह इनकी पत्नी के शाप के कारण है। ब्रह्मपुराण के अनुसार, बचपन से ही शनिदेव भगवान श्रीकृष्ण के भक्त थे। बड़े होने पर इनका विवाह चित्ररथ की कन्या

से किया गया। इनकी पत्नी सती-साध्वी और परम तेजस्विनी थीं। एक बार पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से वे इनके पास पहुचीं पर शनि श्रीकृष्ण के ध्यान में मग्न थे। इन्हें बाह्य जगत की कोई सुधि ही नहीं थी। पत्नी प्रतीक्षा कर थक गई तब क्रोधित हो उसने इन्हें शाप दे दिया कि आज से तुम जिसे देखोगे वह नष्ट हो जाएगा।

ध्यान टूटने पर जब शनिदेव ने उसे मनाया और समझाया तो पत्नी को अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ, किन्तु शाप के प्रतिकार की शक्तिउसमें ना थी। तभी से शनिदेव अपना सिर नीचा करके रहने लगे। क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उनके द्वारा किसी का अनिष्ट हो।

सातवीं कथा - रोहिणी शकट भेदन कथा

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार यह यदि रोहिणी-शकट भेदन कर दें तो पृथ्वी पर 12 वर्ष का अकाल पड़ जाये और प्राणियों का बचना मुश्किल हो जाये। कहते हैं कि यह योग राजा दशरथ के समय में आने वाला था। जब ज्योतिषियों ने राजा को इस बारे में बताया तो प्रजा को बचाने के लिए दशरथ नक्षत्रमण्डल में पहुंच गए। वहां जाकर पहले उन्होंने शनिदेव को प्रणाम किया फिर पृथ्वीवासियों की भलाई के लिए क्षत्रिय धर्म के अनुसार युद्ध का आह्वान किया। शनिदेव उनकी कर्तव्यनिष्ठा से परम प्रसन्न हुए और वर मांगने को कहा। राजा दशरथ ने वर मांगा कि जब तक सूर्य, नक्षत्र आदि विद्यमान हैं, तब तक आप शकट-भेदन ना करें। शनिदेव ने उन्हें यह वर देकर संतुष्ट कर दिया। शनि के अधिदेवता प्रजापति ब्रह्मा और प्रत्यधिदेवता यम हैं।

आठवीं कथा - संतानदायक शनि प्रदोष कथा

शनि प्रदोष व्रत की पौराणिक कथा के अनुसार प्राचीनकाल में एक नगर सेठ थे। सेठजी के घर में हर प्रकार की सुख-सुविधाएं थीं लेकिन संतान नहीं होने के कारण सेठ और सेठानी हमेशा दुःखी रहते थे। काफी सोच-विचार करके सेठजी ने अपना काम नौकरों को सौंप दिया और खुद सेठानी के साथ

तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। अपने नगर से बाहर निकलने पर उन्हें एक साधु मिले, जो ध्यानमग्न बैठे थे। सेठजी ने सोचा, क्यों न साधु से आशीर्वाद लेकर आगे की यात्रा की जाए।

सेठ और सेठानी साधु के निकट बैठ गए। साधु ने जब आंखें खोलीं तो उन्हें ज्ञात हुआ कि सेठ और सेठानी काफी समय से आशीर्वाद की प्रतीक्षा में बैठे हैं। साधु ने सेठ और सेठानी से कहा कि मैं तुम्हारा दुःख जानता हूं। तुम शनि प्रदोष व्रत करो, इससे तुम्हें संतान सुख प्राप्त होगा। साधु ने सेठ-सेठानी को प्रदोष व्रत की विधि भी बताई और भगवान शंकर की यह वंदना बताई।

भगवान शंकर की वंदना –

हे रुद्रदेव शिव नमस्कार। शिवशंकर जगगुरु नमस्कार।।
हे नीलकंठ सुर नमस्कार। शशि मौलि चन्द्र सुख नमस्कार।।
हे उमाकांत सुधि नमस्कार। उग्रत्व रूप मन नमस्कार।।
ईशान ईश प्रभु नमस्कार। विश्वेश्वर प्रभु शिव नमस्कार।।

दोनों साधु से आशीर्वाद लेकर तीर्थयात्रा के लिए आगे चल पड़े। तीर्थयात्रा से लौटने के बाद सेठ और सेठानी ने मिलकर शनि प्रदोष व्रत किया जिसके प्रभाव से उनके घर एक सुंदर पुत्र का जन्म हुआ।

शनि की साढ़ेसाती

जन्मकुंडली में चन्द्र स्थित राशि, जन्मराशि कहलाती है। जब जन्म राशि से गोचर में शनि द्वादश भाव में आता है तब साढ़ेसाती प्रारंभ होती है। यह साढ़ेसाती का प्रथम चरण कहलाता है। जन्मराशि अर्थात चन्द्र पर शनि के गोचर का काल साढ़ेसाती का दूसरा चरण और जन्मराशि से द्वितीय भाव में गोचरस्थ शनि का प्रवेश काल तृतीय चरण कहलाता है।

इन राशियों में शनि करीब ढाई-ढाई वर्ष रहता है और तीन राशियों में साढ़ेसात वर्ष रहता है। यही साढ़े सात साल साढ़ेसाती के नाम से जाने जाते हैं। साढ़ेसाती का प्रभाव साढ़े सात वर्ष एवं ढैय्या का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है। सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है।

प्रथम बचपन में, द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता तथा भाई-बहनों पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है। परन्तु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

इस अवधि में जातक को सामान्य से अधिक संघर्ष की स्थिति से गुजरना पड़ सकता है व इस अवधि में जातक के रोगग्रस्त होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं, अनेक बार असफलताओं का सामना भी करना पड़ता है। यह आवश्यक नहीं है कि यह सारी अवधि एक जैसी हो, यह समय उतार-चढ़ाव वाला भी हो सकता है।

साढ़ेसाती के दौरान माना जाता है कि व्यक्ति को निराशा, असंतोष, विवाद, कलह और विपरीत परिणामों का सामना करना होता है, परंतु पूरी तरह से इसे स्वीकार करना सही नहीं है। साढ़ेसाती सभी के लिए बुरा परिणाम लाता है ऐसा नहीं है। उदाहरणस्वरूप अगर शनि योग कारक है तो इस बात की कोई संभावना नहीं बनती कि शनि व्यक्ति को परेशान करेगा।

साढ़ेसाती का प्रभाव

यह सही है कि साढ़ेसाती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं है। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़ेसाती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़ेसाती व्यक्तिको कर्मशील बनाती है और उसे कर्म की ओर ले जाती है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाती है।

शनि साढ़ेसाती के चरण

प्रथम चरण का फल

साढ़ेसाती का प्रथम चरण–कहते हैं कि इस चरण में शनि मस्तक पर रहता है। इस चरणावधि में व्यक्तिकी आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है। आय की तुलना में व्यय अधिक होते हैं। सोचे गए कार्य बिना बाधाओं के पूरे नहीं होते हैं। आर्थिक तंगी के कारण अनेक योजनाएं आरम्भ नहीं हो पाती हैं।

अचानक धनहानि होती है, अनिद्रा रोग हो सकता है एवं स्वास्थ्य खराब रहता है। भ्रमण के कार्यक्रम बनकर बिगड़ते रहते हैं। यह अवधि बुजुर्गो हेतु विशेष कष्टकारी सिद्ध होती है। मानसिक चिन्ताओं में वृद्धि हो जाती है। पारिवारिक जीवन में बहुत सी कठिनाईयां आती हैं और परिश्रम के अनुसार लाभ नहीं मिलता है।

साढ़ेसाती का दूसरा चरण

व्यक्तिको शनि साढ़ेसाती की इस अवधि में पारिवारिक तथा व्यवसायिक जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते हैं। उसके संबंधी भी उसको कष्ट देते हैं, और घर-परिवार से दूर रहना पड़ता है। रोगों में वृद्धि होती है, संपत्ति से सम्बन्धित मामले परेशान कर सकते हैं।

मित्रों एवं स्वजनों का सहयोग समय पर नहीं मिल पाता है। कार्यो के बार-बार बाधित होने के कारण व्यक्तिके मन में निराशा घर कर जाती है। कार्यो को पूर्ण करने के लिये सामान्य से अधिक प्रयास करने पड़ते हैं। आर्थिक परेशानियां तो मुंह खोले खड़ी रहती हैं।

साढ़ेसाती का तीसरा चरण

शनि साढ़ेसाती के तीसरे चरण में भौतिक सुखों में कमी होती है, उसके अधिकारों में कमी होती है और आय की तुलना में व्यय अधिक होता है, स्वास्थ्य संबन्धी परेशानियां आती हैं, परिवार में शुभ कार्य बिना बाधा के पूरे नहीं होते हैं। वाद-विवाद के योग बनते हैं और संतान से वैचारिक मतभेद उत्पन्न होते हैं। यह अवधि कल्याणकारी नहीं रहती है। इस चरण में वाद-विवादों से बचना चाहिए।

शनि की ढैय्या

जन्म चंद्र से जब गोचर का शनि चौथे अथवा आठवें भाव में गोचर करता है तब शनि की ढैय्या आरंभ होती है। ढैय्या अर्थात ढाई साल का समय। जन्म कुंडली का अच्छी तरह से विश्लेषण करने के बाद ही शनि की ढैय्या का प्रभाव बताना चाहिए। यह अच्छी अथवा बुरी तब होगी जब कुंडली में समस्याएँ होंगी।

शनिवार व्रत कथा

शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या के दौरान शनिवार को व्रत रखने के साथ-साथ शनिवार व्रत कथा का पढ़ना और सुनना विशेष रूप से लाभदायक होता है।

एक समय सभी नवग्रहों यथा सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु में विवाद छिड़ गया कि इनमें सबसे बड़ा कौन है ? सभी आपस में लड़ने लगे और कोई निर्णय ना होने पर देवराज इंद्र के पास निर्णय कराने पहुंचे। इंद्र इससे घबरा गये और इस निर्णय को देने में अपनी असमर्थता जतायी। परन्तु उन्होंने कहा, कि इस समय पृथ्वी पर राजा विक्रमादित्य हैं, जो कि अति न्यायप्रिय हैं। वे ही इसका निर्णय कर सकते हैं। सभी ग्रह एक साथ राजा विक्रमादित्य के पास पहुंचे और अपना विवाद बताया, साथ ही निर्णय के लिये कहा। राजा इस समस्या से अति चिंतित हो उठे, क्योंकि वे जानते थे, कि जिस किसी को भी छोटा बताया, वही कुपित हो उठेगा। तब राजा को एक उपाय सूझा। उन्होंने स्वर्ण, रजत, कांस्य, पीतल, सीसा, रांगा, जस्ता, अभ्रक और लौह से नौ सिंहासन बनवाये और उन्हें इसी क्रम से रख दिये। फिर उन सबसे निवेदन किया कि आप सभी अपने-अपने सिंहासन पर स्थान ग्रहण करें। जो अंतिम सिंहासन पर बेठेगा, वही सबसे छोटा होगा। इस अनुसार लौह सिंहासन सबसे बाद में होने के कारण शनिदेव सबसे बाद में बैठ तो वही सबसे छोटे कहलाये। उन्होंने सोचा कि राजा ने यह जान बूझ कर किया है।

उन्होंने कुपित होकर राजा से कहा "राजा! तू मुझे नहीं जानता। सूर्य एक राशि में एक महीना, चंद्रमा सवा दो महीना दो दिन, मंगल डेढ़ महीना, बृहस्पति तेरह महीने, व बुध और शुक्र एक-एक महीने विचरण करते हैं। परन्तु मैं ढाई से साढ़े सात साल तक रहता हुँ। बड़े-बड़ों का मैंने विनाश किया है। श्री

राम की साढ़ेसाती आने पर उन्हें वनवास हो गया, रावण की साढ़ेसाती आने पर उसकी लंका को बंदरों की सेना से परास्त होना पड़ा। अब तुम सावधान रहना। " ऐसा कहकर कुपित होते हुए शनिदेव वहां से चले गये। अन्य देवता खुशी-खुशी चले गये। कुछ समय बाद राजा की साढेसाती आयी। तब शनि देव घोड़ों के सौदागर बनकर वहां आये। उनके साथ कई बढ़िया घोड़े थे। राजा ने यह समाचार सुन अपने अश्वपाल को अच्छे घोड़े खरीदने की आज्ञा दी। उसने कई अच्छे घोड़े खरीदे व एक सर्वोत्तम घोड़े को राजा को सवारी हेतु दिया। राजा ज्यों ही उस पर बैठा, वह घोड़ा सरपट वन की ओर भागा, भीषण वन में पहुंच वह अंतर्धान हो गया और राजा भूखा-प्यासा भटकता रहा, तब एक ग्वाले ने उसे पानी पिलाया। राजा ने प्रसन्न होकर उसे अपनी अंगूठी दी। वह अंगूठी देकर राजा नगर को चल दिया और वहां अपना नाम उज्जैन निवासी वीका बताया। वहां एक सेठ की दूकान में उसने जल इत्यादि पिया और कुछ विश्राम भी किया।

भाग्यवश उस दिन सेठ की बड़ी बिक्री हुई। सेठ उसे खाना इत्यादि कराने खुश होकर अपने साथ घर ले गया। वहां उसने एक खूंटी पर देखा कि एक हार टंगा है, जिसे खूंटी निगल रही है। थोड़ी देर में पूरा हार गायब था। तब सेठ ने आने पर देखा कि हार गायब है। उसने समझा कि वीका ने ही उसे चुराया है। उसने वीका को कोतवाल के पास पकड़वा दिया। फिर राजा ने भी उसे चोर समझ कर हाथ-पैर कटवा दिये। वह चौरंगिया बन गया और नगर के बाहर फिंकवा दिया गया। वहां से एक तेली निकल रहा था, जिसे दया आयी और उसने वीका को अपनी गाड़ी में बिठा लिया। वह अपनी जीभ से बैलों को हांकने लगा।

उस काल राजा की शनि दशा समाप्त हो गयी। वर्षा काल आने पर वह मल्हार गाने लगा। तब वह जिस नगर में था, वहां की राजकुमारी मनभावनी को वह इतना भाया, कि उसने मन ही मन प्रण कर लिया कि वह उस राग गाने वाले से ही विवाह करेगी। उसने दासी को ढूंढने भेजा। दासी ने बताया कि वह एक चौरंगिया है। परन्तु राजकुमारी ना मानी। अगले ही दिन से उठते ही

वह अनशन पर बैठ गयी कि विवाह करेगी तो उसी से। उसे बहुत समझाने पर भी जब वह न मानी, तो राजा ने उस तेली को बुला भेजा और विवाह की तैयारी करने को कहा। फिर उसका विवाह राजकुमारी से हो गया। तब एक दिन सोते हुए स्वप्न में शनिदेव ने राजा से कहा- राजन्! देखा तुमने मुझे छोटा बता कर कितना दुःख झेला है। तब राजा ने उनसे क्षमा मांगी और प्रार्थना की कि हे शनिदेव! जैसा दुःख मुझे दिया है, किसी और को न दें। शनिदेव मान गये और कहा - जो मेरी कथा और व्रत कहेगा, उसे मेरी दशा में कोई दुःख न होगा। जो नित्य मेरा ध्यान करेगा और चींटियों को आटा डालेगा, उसके सारे मनोरथ पूर्ण होंगे। साथ ही राजा को हाथ-पैर भी वापस दिये। प्रातः आंख खुलने पर राजकुमारी ने देखा, तो वह आश्चर्यचकित रह गयी। वीका ने उसे बताया कि वह उज्जैन का राजा विक्रमादित्य है, सभी अत्यंत प्रसन्न हुए। सेठ ने जब सुना, तो वह पैरों पर गिर कर क्षमा मांगने लगा। राजा ने कहा, कि वह तो शनिदेव का कोप था। इसमें किसी का कोई दोष नहीं। सेठ ने फिर भी निवेदन किया कि मुझे शांति तब ही मिलेगी जब आप मेरे घर चलकर भोजन करेंगे।

सेठ ने अपने घर नाना प्रकार के व्यंजनों से राजा का सत्कार किया, साथ ही सबने देखा, कि जो खूंटी हार निगल गयी थी, वही अब उसे उगल रही थी। सेठ ने अनेक मोहरें देकर राजा का धन्यवाद किया और अपनी कन्या श्रीकंवरी से पाणिग्रहण का निवेदन किया। राजा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। कुछ समय पश्चात राजा अपनी दोनों रानियों मनभावनी और श्रीकंवरी को सभी उपाहार सहित लेकर उज्जैन नगरी को चले। वहां पुरवासियों ने सीमा पर ही उनका स्वागत किया। सारे नगर में दीपमाला हुई व सबने खुशी मनायी। राजा ने घोषणा की कि मैंने शनि देव को सबसे छोटा बताया था, जबकि असल में वही सर्वोपरि हैं। तबसे सारे राज्य में शनिदेव की पूजा और कथा नियमित होने लगी। सारी प्रजा ने बहुत समय खुशी और आनंद के साथ बीताया। जो कोई शनि देव की इस कथा को सुनता या पढ़ता है, उसके सारे दुःख दूर हो जाते हैं। व्रत के दिन इस कथा को अवश्य पढ़ना चाहिये।

शनि यंत्र/व्रत

शनि यंत्र

यदि शनि की ढैया या साढ़ेसाती का समय हो तो शनि यंत्र का पूजन अवश्य करना चाहिए। श्रद्धापूर्वक इस यंत्र की प्रतिष्ठा करके प्रतिदिन यंत्र के सामने सरसों के तेल का दीप जलायें। नीला या काला पुष्प चढ़ायें, ऐसा करने से अनेक लाभ होंगे।

मृत्यु, कर्ज, मुकद्दमा, हानि, क्षति, पैर आदि की हड्डी, वात रोग तथा सभी प्रकार के रोग से परेशान लोगों हेतु यंत्र अधिक लाभकारी है। नौकरी पेशा आदि लोगों को उन्नति शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी है, जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मंत्र : ॐ प्रां प्री प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

शनिवार का व्रत

शनि की शांति हेतु शनिवार का व्रत सर्वमान्य है। शनि हेतु कम से कम 19 व्रत किए जा सकते हैं। यह व्रत मनस्ताप, रोग, शोक, भय, बाधा आदि से मुक्ति एवं शनिजन्य पीड़ा के निवारण के लिए विशेष रूप से फलदायक माना जाता है।

इस दिन प्रातः स्नानोपरांत काले तिल और लौंग मिश्रित जल पश्चिम की ओर मुख करके पीपल वृक्ष पर चढ़ाकर शिवोपासना या हनुमत आराधना करनी चाहिए। साथ ही शनि की लौह प्रतिमा की पूजा करनी चाहिए।

फिर शनिवार व्रत कथा का पाठ करना चाहिए। उड़द के बने पदार्थ वृद्ध ब्राह्मण को भेंट करना चाहिए और स्वयं सूर्यास्त के पश्चात् भोजन करना चाहिए। भोजन के पूर्व शनि की शांति हेतु 'ॐ शं शनैश्चराय नमः मंत्र का तीन-तीन माला जप करना चाहिए।

शनि शांति के उपाय

शनि कालपुरुष का दुख है। यदि जन्मकुंडली में शनि की स्थिति अनुकूल न हो तो शनि की साढ़ेसाती व दशा आदि में विशेष कष्ट की अनुभूति होती है। साढ़ेसाती का संबंध चंद्रमा अर्थात् हमारे मन से है। इसलिए इस अवधि में जातक का विभिन्न कष्टों से गुजरने के कारण मनोबल गिरने लगता है तथा आत्मविश्वास व साहस में विशेष कमी आने लगती है। ऐसा प्रभाव विशेष रूप से तब होता है जब कुंडली में शनि की स्थिति अधिक अशुभ हो।

साढ़ेसाती में शनि जातक के अहंकार को नष्ट करना चाहता है अतः इस समय जातक को किसी से वैर मोल नहीं लेना चाहिए क्योंकि यह विरोध और अधिक परेशानी लेकर आता है अपितु हनुमान जी की तरह से विनम्रता व सादगी से व्यवहार करना चाहिए व अपने कनिष्ठ की अवज्ञा नहीं करनी चाहिए व साथ में अपने जूनियर लोगों से स्नेह पूर्ण संबंध रखना चाहिए। इस प्रकार से साढ़ेसाती शांतिपूर्वक व्यतीत हो जाती है।

शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या के शुरू होने पर जातक को अनेक प्रकार के कष्ट प्राप्त होते हैं। समय रहते निम्नांकित उपाय करने से शनि प्रदत्त कष्टों से बचा जा सकता है :

- यदि मानसिक तनाव अधिक हो तो सातमुखी रुद्राक्ष माला धारण करनी चाहिए तथा उस पर शनि के तन्त्रोक्त मंत्र ''ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'' का जप 108 बार करके शनिवार के दिन छाया दान करना चाहिए। अन्य मंत्रों का उत्कीलन करना पड़ता है परंतु उपरोक्त तंत्रोक्त मंत्र बिना उत्कीलन के भी फलीभूत हो जाता है।
- साढ़े साती में 1-14 मुखी रुद्राक्ष माला धारण करने से सभी प्रकार के शनि जनित कष्टों से छुटकारा मिलता है।
- शनि के जागृत व सिद्ध मंदिर के दर्शन करें व तेल चढ़ाएं।
- नजरदोष होने पर हनुमान पूजा करके लाल टीका लगाएं।

- शनि शांति के लिए तेल व तिल के दान के अतिरिक्त हनुमान चालीसा, संकटमोचक हनुमत् स्तोत्र, हनुमानाष्टक, हनुमान मंत्र, सुंदरकांड, पंचमुखी हनुमान कवच, हनुमानसहस्रनाम, बजरंग बाण आदि के पाठ के अतिरिक्त हनुमान के मंदिर में सिंदूर चढ़ाया जाता है।
- यदि सरकारी परेशानी है अथवा नौकरी में बाधाएं आ रही हैं जैसे अधिकारी से मतभेद/तनाव है तो प्रतिदिन सुंदरकांड का पाठ करें। इसे शनिवार को आरंभ करके शुक्रवार को संपन्न करें।
- यदि आर्थिक हानि हो गई है तो मंगल व शनिवार के दिन मांस मदिरा का सेवन न करें, मंगलवार का व्रत करें व हनुमान जी को चोला चढ़ाएं, तथा 800 ग्राम गुड़ जल में प्रवाहित करें। हनुमान सहस्रनाम का पाठ प्रतिदिन करें व 43 वें दिन गुड़ व चना का प्रसाद बांटें। इसके अतिरिक्त शनिवार के दिन काली दाल, काला वस्त्र आदि शनि की वस्तुओं का दान करें।
- यदि घर में कलह हो तो सायंकाल घर में सरसों के तेल का दीपक जलाएं।
- विवाह बाधा होने पर लक्ष्मी, भैरव, हनुमान व गणपति इन सभी की संयुक्त उपासना करें। ऐसा करने से मांगलिक दोष की शांति होगी व शनि व मंगल जनित विवाह बाधा दोष शांत होगा।
- यदि घर में बच्चे जिद्‌दी हो रहे हैं, कहना नहीं मानते तो हनुमान जी की पूर्ण सेवा भाव व ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए पूजा करें व मंगलवार का व्रत करें तथा स्वयं भोजन पकाकर खाएं। आपकी परेशानी अवश्य दूर होगी।
- साढ़ेसाती जनित अति कष्ट व शारीरिक कष्ट से निवारण हेतु शुक्रवार को सवा किलो या सवा पाव काले चने पानी में भिगो दें। शनिवार को पानी से निकालकर चने को काले कपड़े में बांध लें। साथ में एक कच्चा कोयला, एक रुपये का सिक्का व चुटकी भर काले तिल बांध लें। सिर के ऊपर से घुमाकर इन सामग्रियों को यमुना जी में विसर्जित करें। यह क्रिया 5 से 8 बार करने से सभी प्रकार के शनि कष्ट दूर हो जाते हैं।

शनि साढ़ेसाती में स्वास्थ्य प्राप्ति उपाय

- प्रतिदिन सूर्योदय के समय भगवान सूर्य को गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्घ्य दें तथा सूर्य की सात परिक्रमा करें व सूर्य को नमस्कार करें।
- यदि कोई व्यक्ति गंभीर रोग से ग्रस्त हो तो 64 अक्षरीय महामृत्युंजय मंत्र का सवा लाख जप कराएं :

ऊँ ह्रौं जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः, ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। ऊँ स्वः भुवः भूः ऊँ सः जूं ह्रौं ऊँ।

शनि साढ़ेसाती में अच्छी पढ़ाई हेतु

रुद्राक्ष 4, 5, 6 व 7 मुखी और गणेश रुद्राक्ष का लॉकेट धारण करें एवं केसर हल्दी का तिलक प्रतिदिन माथे पर लगाएं। "ऊँ ऐं महासरस्वत्यै नमः" मंत्र की एक माला जप नित्य प्रति करें।

शनि साढ़ेसाती में आर्थिक कष्ट से मुक्ति हेतु

- सुन्दरकाण्ड का पाठ करें।
- गुरुवार को गाय को दो आटे के पेड़े पर थोड़ा हल्दी लगाकर खिलाएं। इसके साथ ही गुड़ व चने की पीली दाल का भोग गाय को लगाना शुभ होता है।
- घर में शनि श्रीयंत्र व कार्य स्थल पर सूर्यमणि श्रीयंत्र स्थापित करें तथा श्रीसूक्त व लक्ष्मीसूक्त का नित्यप्रति पाठ करें। कुबेर यंत्र को उत्तर दिशा में स्थापित करें। आठ छुआरे लाल कपड़े में बांधकर तिजोरी में रखें।

शनि साढ़ेसाती में व्यापारिक समस्या निवारण हेतु

- कई बार एक मशीन के न काम करने से पूरी उत्पादकता प्रभावित हो जाती है। जो मशीन काम न कर रही हो उस पर विश्वकर्मा की पूजा करके मत्स्य यंत्र चिपका दें तथा नित्यप्रति धूप दीपादि से पूजा करें।
- कर्मचारियों के परेशान करने पर काली राई लेकर पूरे कार्यालय व कार्यालय परिसर में डालें।
- यदि व्यापार में लाभ कम हो तो 16 छुआरे लाल कपड़े में बांधकर मंदिर में रखें व व्यापार वृद्धि यंत्र कार्यालय में स्थापित करें।

शनि के उपाय

ज्योतिषशास्त्रानुसार शनि न्याय के देवता हैं। वे सूर्य पुत्र एवं यमराज के भ्राता हैं। अपनी दशा, साढ़ेसाती आदि में किए गए कर्म के भले या बुरे फल देते हैं।

शनि महाराज की शांति या प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित उपाय करने से आप अपने दुःख दूर कर सकते हैं।

- काली गाय का पूजन कर 8 बूंदी के लड्डू खिलाकर उसकी परिक्रमा करें तथा उसकी पूंछ से अपने सिर को 8 बार झाड़ दें।
- काला सुरमा सुनसान स्थान में हाथ भर गड्ढा खोदकर गाड़ दें।
- पीपल वृक्ष की परिक्रमा करें। प्रातःकाल मीठा दूध वृक्ष की जड़ में चढ़ाएं तथा तेल का दीपक पश्चिम की ओर बत्ती कर लगाएं तथा 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' मंत्र पढ़ते हुए 1-1 दाना मीठी बूंदी का प्रत्येक परिक्रमा पर 1 मंत्र तथा 1 दाना चढ़ाएं। इसके पश्चात शनि देवता से कृपा प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करें।
- शनि यंत्र धारण करें।
- पानी वाले 11 नारियल, काले-सफेद तिल 400-400 ग्राम, 8 मुट्ठी कोयला, 8 मुट्ठी जौ, 8 मुट्ठी काले चने, 9 कीलें काले नए कपड़े में बांधकर संध्या के पहले शुद्ध जल वाली नदी में अपने पर से 1-1 कर उतार कर शनिदेव की प्रार्थना कर पूर्व की ओर मुंह रखते हुए बहा दें।
- काले घोड़े की नाल अपने घर के दरवाजे के ऊपर स्थापित करें। मुंह ऊपर की ओर खुला रखें। दुकान या फैक्टरी के द्वार पर लगाएं तो खुला मुंह नीचे की ओर रखें।
- 800 ग्राम तिल तथा 800 ग्राम सरसों का तेल दान करें। काले कपड़े का दान करें।
- शनि मंत्रों का जाप सबसे सटीक उपाय है –

  (अ) 'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'।

  (ब) 'ॐ शं शनैश्चराय नमः।

इनका जप लगातार किया जा सकता है तथा शनैः-शनैः कष्टों से राहत पाई जा सकती है।

- तीन काले कुत्तों को तेल लगी रोटी खिलाएं।
- शनिवार का व्रत शनि जयंती से प्रारंभ कर शनिदेव की कथा सुनें या पढ़ें।
- बरगद के वृक्ष में, जो पश्चिम दिशा में स्थित हो, गौदुग्ध डालकर उससे भीगी मिट्टी से नित्य तिलक करें तथा सप्त धान्य दान करें।
- बहते जल में शराब बहाएं तथा स्वयं शराब न पिएं।
- शनि की दशा, साढ़ेसाती इत्यादि में कोई भी अनैतिक कार्य न करें।
- शनि की अशुभ दशा में मकान न बनवाएं और न ही खरीदें।
- नित्य सूर्य को अर्घ्य सरसों का तेल मिलाकर दें।
- दुर्गा पाठ-रुद्राभिषेक करें या करवाएं।
- नाव की कील या काले घोड़े की नाल (अगले सीधे पैर) की अंगूठी मध्यमा अंगुली में धारण करें।
- गोधूलि वेला में चींटियों को आटा डालें।
- भगवान शंकर पर काले तिल व कच्चा दूध नित्य प्रतिदिन चढ़ाना चाहिए। यदि शिवलिंग पीपल वृक्ष के नीचे हो तो अति उत्तम।
- काली उड़द जल में प्रवाहित करें या काली उड़द भिखारियों को दान करें।
- शनि ग्रह के स्वामी भगवान भैरव की साधना, मंत्र-जप आदि करें।
- मां भगवती काली की आराधना करने से अत्यंत शुभ फल प्राप्त होते हैं।
- शनि की शांति के लिए महामृत्युंजय मंत्र का जप भी कर सकते हैं।
- कौवे को प्रतिदिन रोटी खिलाएं।
- छायादान करें अर्थात कटोरी में थोड़ा-सा सरसों का तेल लेकर उसमें एक रुपये का सिक्का डालकर अपना चेहरा देखकर शनि मंदिर में अपने पापों की क्षमा मांगते हुए शनिदेव के चरणों में अर्पित करें।
- दांत, नाक और कान सदा साफ रखें।
- अंधे, अपंगों की सेवा तथा सेवकों व सफाइकर्मियों से अच्छा व्यवहार रखें।
- पराई स्त्री से कभी संबंध न रखें।

उल्लेखनीय है कि शनि का दुष्प्रभाव उस घर, मकान या भवन पर भी होता है, जहां का वास्तु बिगड़ा हो। ऐसे में ये उपाय काम नहीं आएंगे।

ऐसे में शनि के कुछ उपाय आपको बताए जा रहे हैं जिससे शनि के दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है।

- खाली पेट नाश्ते से पूर्व काली मिर्च चबाकर गुड़ या बताशे से खाएं। भोजन करते समय नमक कम होने पर काला नमक तथा मिर्च कम होने पर काली मिर्च का प्रयोग करें। भोजन के उपरांत लौंग खाएं। भोजन करते समय मौन रहें।
- गरीबों, असहायों को काला कंबल सप्तधान्य, काले वस्त्र दान करें।
- प्रत्येक शनिवार को सोते समय शरीर व नाखूनों पर तेल लगायें।
- मांस, मछली, मद्य तथा नशीली चीजों का सेवन बिलकुल न करें।
- घर की महिला जातक के साथ सहानुभूति व स्नेह बरतें। गृहलक्ष्मी के झगड़ालू होने से घर से शनि की सुख-शांति व समृद्धि रूठ जाती है। महिला जातक के माध्यम से शनि प्रधान व्यक्तिका भाग्य उदय होता है।
- गुड़ व चने से बनी वस्तु भोग लगाकर अधिक से अधिक लोगों को बांटना चाहिए।
- शनि अमावस्या को अपने वजन का दशांश सरसों के तेल का अभिषेक करना चाहिए।
- शनि की वस्तुओं का दान ग्रहण नहीं करें।

शनि के कारण उत्पन्न समस्या विशेष का उपाय

- शनिवार को शनि देव को प्रसन्न करने के लिए काले धागे का उपाय करें। इसके लिए 19 हाथ के बराबर नाप कर एक काला धागा की माला बना लें। मंदिर में जाकर इस माला को शनिदेव को चढ़ा दें फिर माला को अपने गले में धारण करें या बाजू में बांध लें आपके ऊपर से शनि प्रकोप मिट जाएगा।
- अगर शादी शुदा जिंदगी में अनबन हो या जीवनसाथी की सेहत ठीक न हो तो शनिवार के दिन बरगद के पेड़ की जड़ में दूध डाल दें। जड़ में

दूध डालने से गीली हुई मिट्टी से तिलक लगाकार घर लौट आएं। सेहत संबंधी परेशानियों से निजात मिलेगी और साथी को आराम मिलेगा।

- तनाव को कम करने के लिए शनिवार के दिन गुड़ और नारियल के तेल में कपूर मिलाकर पीपल के पेड़ के नीचे रख दें। इस टोटके से आपको जरूर आराम मिलेगा। आप मन में शांति को महसूस करेंगे।
- मुकदमे को जीतने के लिए 11 शनिवार तक पीपल के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाएं। शनिवार को दीपक जलाते समय 11 बार 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' मंत्र का जाप करें। इस उपाय से कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी।
- शनिवार को हनुमान मंदिर जाकर हनुमान जी को पान का प्रसाद चढ़ाने से सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। अटके काम बन जाते हैं।.
- शनिवार को स्नान करने के बाद एक कटोरी में तेल लें और उसमें अपना चेहरा देखकर बाद में किसी को ये तेल दान कर दें। इससे आपका आने वाला पूरा महीना शांति से बीतेगा।

शनि के लाल किताब के उपाय

लग्न स्थित शनि अशुभ फल देता है। ऐसे में जातक को बंदरों की सेवा करनी चाहिए। चीनी मिला हुआ दूध बरगद के पेड़ की जड़ में डालकर गीली मिट्टी से तिलक करना चाहिए। झूठ नहीं बोलना चाहिए। दूसरों की वस्तुओं पर बुरी दृष्टि नहीं डालनी चाहिए।

शनि दूसरे घर में अशुभ फल दे रहा हो तो जातक को अपने माथे पर दूध या दही का तिलक लगाना चाहिए।

शनि तीसरे भाव में हो तो जातक को मांस, मदिरा आदि का सेवन नहीं करना चाहिए। ऐसे में जातक को तिल, नींबू एवं केले का दान करना चाहिए। घर में काला कुत्तों को पालें एवं उसकी सेवा करें।

शनि चौथे घर में अशुभ फल दे रहा हो तो जातक को कुएं में दूध डालना चाहिए। बहते हुए पानी में शराब डालनी चाहिए, हरे रंग की वस्तुओं से परहेज

नहीं रखना चाहिए। मजदूरों की सहायता करें व भैंस एवं कौओं को भोजन दें।

पांचवें भाव में शनि अशुभ फल दे रहा हो तो जातक को अपने पास सोना एवं केसर रखना चाहिए। दांतों को साफ रखना चाहिए। लोहे का छल्ला पहनने से व साबुत हरी मूंग मंदिर में दान करने से शनि की पीड़ा कम होगी।

छठे भाव में शनि अशुभ फल दे रहा हो तो जातक को चमड़े एवं लोहे की वस्तुएं खरीदनी चाहिए। इस भाव में जातक को 39 साल की उम्र के बाद ही मकान बनाना चाहिए।

सप्तम भाव में शनि अशुभ फल दे रहा हो तो जातक को शहद से भरा हुआ बर्तन कहीं सुनसान जगह में दबाना चाहिए। बांसुरी में चीनी भरकर कहीं सुनसान जगह में दबाएं।

आठवें घर में शनि अशुभ फल दे रहा हो तो अपने पास चांदी का टुकड़ा रखना चाहिए।

नौवें भाव में शनि अशुभ फल दे रहा हो तो छत पर कबाड़, लकड़ी आदि नहीं रखनी चाहिए, जो बरसात आने पर भीगती हो। चांदी के चौरस टुकड़े पर हल्दी का तिलक लगाकर उसे अपने पास रखना चाहिए। पीपल के पेड़ को जल देने के साथ-साथ गुरुवार का व्रत भी करना चाहिए।

दसवें भाव में शनि अशुभ फल दे रहा हो तो मांस, मदिरा आदि का सेवन नहीं करना चाहिए। चने की दाल तथा केले मंदिर में चढ़ाने चाहिए।

ग्यारहवें भाव में शनि अशुभ फल दे रहा हो तो जातक को घर में चांदी की ईंट रखनी चाहिए। उसे मांस, मदिरा आदि सेवन एवं दक्षिणामुखी मकान में वास नहीं करना चाहिए।

बारहवें भाव में शनि अशुभ फल दे रहा हो तो कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए। मांस, मदिरा, अंडे का सेवन नहीं करना चाहिए।

शनि के प्रसिद्ध सिद्ध पीठ

प्रथम सिद्ध पीठ, महाराष्ट्र

शिंगणापुर में स्वयंभू शनि देव का अद्भुत चमत्कार है कि वहां घरों में कोई ताला नहीं लगाता। आज तक के इतिहास में किसी चोर ने वहां जाकर चोरी करने का प्रयास नहीं किया, यदि प्रयास किया भी तो वह तुरंत पीड़ित हुआ। दर्शन, पूजा तथा तेल का स्नान शनिदेव को करवाने से तुंरत शनि पीड़ाओं से मुक्ति प्राप्त होती है यह अकाट्य सत्य है।

द्वितीय सिद्ध पीठ शनिश्चरा मंदिर, ग्वालियर, मध्यप्रदेश

भगवान हनुमान जी के द्वारा लंका से भारतवर्ष में फेंका हुआ पहाड़ी पर स्थित अलौकिक सिद्ध पीठ है। शनिश्चरी अमावस्या को यहां पर मेला लगता है और जातक शनि पर तेल चढ़ाकर गले मिलते हैं और पहने हुए कपड़े तथा जूते यानि समस्त दरिद्रताओं और क्लेशों को छोड़कर नये वस्त्र पहनकर अपने-अपने गंतव्य स्थानों को चले जाते हैं। इस पीठ की पूजा करने का भी तुरंत फल प्राप्त होता है।

तृतीय सिद्ध पीठ, कोकिला वन, उत्तरप्रदेश

यह सिद्ध पीठ उत्तरप्रदेश में कोसी से छः किलोमीटर दूर और नन्द गांव से करीब सटा हुआ कोकिला वन है। इस वन में द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण जो सोलह कला सम्पूर्ण ईश्वर हैं ने शनि को दर्शन दिया और आशीर्वाद दिया कि यह वन मेरा है, इस वन की जो परिक्रमा करेगा और शनि की अर्चना पूजा करेगा। वह श्रीकृष्ण की कृपा से शनि कृपा प्राप्त कर सकेगा तथा उसे शनिकृत समस्त उपद्रव जीवन में नहीं व्यापेंगे।

यहां पर हर शनिवार को मेला लगता है। जातक अपने-अपने श्रद्धा अनुसार कोई दंडवत परिक्रमा करते हुए शनि का महाराजा दशरथकृत सिद्ध शनि स्तोत्र पाठ या शनि के बीज मंत्र का जप करते हुए परिक्रमा करते हैं उनको तुंरत फल की प्राप्ति हो जाती है।

शनि मंत्र

शनि की साढ़ेसाती या शनि की दशा के दौरान यदि शारीरिक मानसिक या आर्थिक कष्ट हो तो निम्न मंत्रों का यथा संभव अधिक से अधिक मंत्र जाप करने से कष्ट दूर होते हैं।

बीज मंत्र : ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

लघु मंत्र : ॐ शं शनैश्चराय नमः।।

शनि ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र :

ॐ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाखः शिवप्रियः।
मंदचार प्रसन्नात्मा पीड़ां हरतु में शनिः।।

पौराणिक शनि मंत्र :

ॐ ह्रीं नीलांजन समाभासं रवि पुत्र यमाग्रजं।
छाया मार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

शनि पत्नी नाम स्तुति :

ध्वजिनी धामिनी चैव कंकाली कलहिप्रिया।
कण्टकी कलही चाऽथ तरंगी महिषी अजा।।

सुख समृद्धिदायक शनि मंत्र :

कोणस्थ, पिंगलो, बभ्रु, कृष्णौ, रौद्रान्तको, यमः।
सौरि शनैश्चरा, मंद, पिप्पलादेन, संस्थितः।।

शनिगायत्री :मंत्र

ॐ कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि नो सौरिः प्रचोदयात्।

श्री शनि चालीसा

शिव पुराण में वर्णित है कि अयोध्या के राजा दशरथ ने शनिदेव को 'शनि चालीसा' से प्रसन्न किया था। शनि साढ़ेसाती और शनि महादशा के दौरान शनि चालीसा का पाठ करना अतिशुभ फलदायक रहता है। इसके नियमित पाठ से शनि संबंधित सभी दोषों का निराकरण होता है।

जयति जयति शनिदेव दयाला। करत सदा भक्तन प्रतिपाला।।
चारि भुजा, तनु श्याम विराज। माथे रतन मुकुट छवि छाज।।

परम विशाल मनोहर भाला। टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला।।
कुंडल श्रवण चमाचम चमक। हिये माल मुक्तन मणि दमक।।

कर में गदा त्रिशूल कुठारा। पल बिच करैं आरिहिं संहारा।।
पिंगल, कृष्णों, छया, नन्दन। यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख भंजन।।

सौरी, मन्द, शनि, दश नामा। भानु पुत्र पूजहिं सब कामा।।
जा पर प्रभु प्रसन्न है जाहीं। रंकहुं राव करैंक्षण माहीं।।

पर्वतहू तृण होई निहारत। तृण हू को पर्वत करि डारत।।
राज मिलत बन रामहिं दीन्हा। कैकेइहुं की मति हरि लीन्हों।।

बनहूं में मृग कपट दिखाई। मातु जानकी गई चतुराई।।
लखनहिं शक्तिविकल करि डारा। मचिगा दल में हाहाकारा।।

रावण की गति-मति बौराई। रामचन्द्र सों बैर बढाई।।
दियो कीट करि कंचन लंका। बजि बजरंग बीर की डंका।।

नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा। चित्र मयूर निगलि गै हारा।।
हार नौलाखा लाग्यो चोरी। हाथ पैर डरवायो तोरी।।

भारी दशा निकृष्ट दिखाया। तेलिहिं घर कोल्हू चलवाया।।
विनय राग दीपक महं कीन्हों। तब प्रसन्न प्रभु है सुख दीन्हों।।

हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी। आपहुं भरे डोम घर पानी।।
तैसे नल परदशा सिरानी। भूंजी-मीन कूद गई पानी।।

श्री शंकरहि गहयो जब जाई। पार्वती को सती कराई।।
तनिक विलोकत ही करि रीसा। नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा।।

पांडव पर भै दशा तुम्हारी। बची द्रौपदी होति उघारी।।
कौरव के भी गति मति मारया। युद्ध महाभारत करि डारया।।

रवि कहं मुख महं धरि तत्काला। लेकर कूदि परयो पाताला।।
शेष देव-लखि विनती लाई। रवि को मुख ते दियो छुड़ई।।

वाहन प्रभु के सात सुजाना। जग दिग्ज गर्दभ मृग स्वाना।।
जम्बुक सिंह आदि नखधारी। सो फल जज्योतिष कहत पुकारी।।

गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं। हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं।।
गर्दभ हानि करै बहु काजा। गर्दभ सिद्ध कर राज समाजा।।

जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डार। मृग दे कष्ट प्रण संहार।।
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी। चोरी आदि होय डर भारी।।

तैसहि चारि चरण यह नामा। स्वर्ण लौह चांजी अरु तामा।।
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं। धन जन सम्पत्ति नष्ट कराव।।

समता ताम्र रजत शुभकारी। स्वर्ण सर्व सुख मंगल कारी।।
जो यह शनि चरित्र नित गाव। कबहुं न दशा निकृष्ट सताव।।

अदभुत नाथ दिखावैं लीला। करैं शत्रु के नशि बलि ढीला।।
जो पडित सुयोग्य बुलवाई। विधिवत शनि ग्रह शांति कराई।।

पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत। दीप दान दै बहु सुख पावत।।
कहत रामसुन्दर प्रभु दासा। शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा।।

पाठ शनिश्चर देव को, की हों विमल तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार।।

अथ शनिवज्रपंजर कवचम्

शनि साढ़ेसाती की अवधि में शनिवज्रपंजर कवचम का पाठ परम रक्षक का कार्य करता है। यह मन के अवसाद और अकर्मण्यता राज्य से निपटने में मदद करता है। कार्यक्षेत्र में सफलता, पढ़ाई और जीवन के अन्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए यह एक प्रामाणिक शनि कवच है।

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः।।1।।
श्रृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीड़ाहरं महत्। कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्।।2।।
कवचं देवतावासं वज्रप×जरसंज्ञकम्। शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्।।3।।
ॐ श्रीशनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः। नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः।।4।।
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः।।5।।
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा।।6।।
नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा।
ऊरू ममान्तकः पातु यमो जानुयुगं तथा।।7।।
पादौ मन्दगतिः पातु सर्वाङ्गम् पातु पिप्पलः।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन्मे सूर्यनन्दनः।।8।।
इत्येतत्कवचं दिव्यं पठेत्सूर्यसुतस्य यः।
न तस्य जायते पीड़ा प्रीतो भवति सूर्यजः।।9।।
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा।
कलत्रस्थो गतो वाऽपि सुप्रीतस्तु सदा शनिः।।10।।
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे।
कवचं पठते नित्यं न पीड़ा जायते क्वचित्।।11।।
इत्येतत्कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा। द्वादशाष्टमजन्मस्थ दोषान्नाशयते सदा।
जन्मलग्नस्थितान्दोषान्सर्वान्नाशयते प्रभुः।।12।।
।। इति श्रीब्रह्मांडपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे शनिवज्रपंजरकवचं सम्पूर्णम्।।

अथ शनैश्चर स्तोत्रम्

शनि स्तोत्रम स्त्रोत का पाठ करने से शनि की साढ़ेसाती व ढैया में मानसिक शांति, सुरक्षा के साथ भाग्य व उन्नति का लाभ प्राप्त होता है। यह स्तोत्र शनिदेव का पवित्र आशीर्वाद प्राप्त करने का सटीक माध्यम है।

दशरथ उवाच

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिः पिङ्गलमन्दसौरिः।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीड़ां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।1।।

सुराऽसुराः किं पुरुषोरगेन्द्रा गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।2।।

नरा नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्राः वन्याश्च ये कीटपतङ्गभृङ्गाः।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।3।।

देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेनानिवेशाः पुरपत्तनानि।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।4।।

तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा।
प्रीणाति मंत्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।5।।

प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुर्णजले गुहायाम्।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।6।।

अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात्।
गृहाद् गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय।।7।।

स्रष्टा स्वयम्भूर्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकी।
एतस्त्रिधा ऋग्यजुसाममूर्तिस्तस्मै नमः0 श्रीरविनन्दनाय।।8।।

शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबान्धवैश्च।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निवार्णपदं तदन्ते।।9।।

कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।10।।

एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।11।।

।।इति श्रीब्रह्मांडपुराणोक्तंशनैश्चर स्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

दशरथकृत श्री शनैश्चर स्तोत्र

इस स्त्रोत का पाठ शनि की साढ़ेसाती व ढैया में किया जाता है। इसके द्वारा शनिदेव जी का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः।।

नमो निर्मांसदेहाय दीर्घश्मश्रुजटाय च।
नमो विशालनेत्राय शुष्कोदरमयाकृत।।

नमः पुष्कलगोत्राय स्थूलरोम्णेच वै पुनः।
नमः दीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्र नमोऽस्तुते।।

नमस्ते कोटराक्षाय दुर्निरीक्ष्याय वै नमः।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय करालिने।।

नमस्ते सर्वभंक्षाये बलीमुख नमोऽस्तु ते।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदायच।।

अधोदृष्टे नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोऽस्तु ते।
नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोऽस्तुते।।

तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृवैय च तपा नमः।।

ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मजसूनवे।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणोत्।।

देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगाः।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः।।
प्रसादं कुरुं मे देव वशर्होऽहमुपागतः।।

आरती श्री शनिदेव जी की

जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी।।जय.।।

श्याम अंक वक्र दृष्ट चतुर्भुजा धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी।।जय.।।

क्रीट मुकुट शीश रजित दिपत है लिलारी।
मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी।।जय.।।

मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी।।जय.।।

देव दनुज ऋषि मुनि सुमरिन नर नारी।
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी ।।जय.।।

सुंदरकाण्ड

सुन्दरकाण्ड का पाठ शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या के दौरान प्रत्येक शनिवार को करना विशेष रूप से चिन्ता हरने वाला और कार्य में सफलता देने वाला होता है। यदि इस पाठ को एक ही बैठक में यदि पूरा न कर सकें तो एक, दो या चार सप्ताह में पूरा करने से भी मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं।

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूड़ामणिम्।।1।।

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च।। 2।।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।। 3।।

जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई।।

जब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी।।
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा। चलेउ हरषि हियँ धरि रघुनाथा।।

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर।।
बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी।।

जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता।।
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भाँति चलेउ हनुमाना।।

जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी।।

दो०- हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।। 1।।

जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा।।
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता। पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता।।

आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा। सुनत बचन कह पवनकुमारा।।
राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं।।

तब तव बदन पैठिहउँ आई। सत्य कहउँ मोहि जान दे माई।।
कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना। ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना।।

जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा।।
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ। तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ।।

जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा।।
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा।।

बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मागा बिदा ताहि सिरु नावा।।
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुधि बल मरमु तोर मैं पावा।।

दो०- राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान।।2।।

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई। करि माया नभु के खग गहई।।
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं। जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं।।

गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई। एहि बिधि सदा गगनचर खाई।।
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा। तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा।।

ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा।।
तहाँ जाइ देखी बन सोभा। गुंजत चंचरीक मधु लोभा।।

नाना तरु फल फूल सुहाए। खग मृग बृंद देखि मन भाए।।
सैल बिसाल देखि एक आगें। ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें।।

उमा न कछु कपि कै अधिकाई। प्रभु प्रताप जो कालहि खाई।।
गिरि पर चढि लंका तेहिं देखी। कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी।।

अति उतंग जलनिधि चहु पासा। कनक कोट कर परम प्रकासा।।

छं॰- कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहु बिधि बना।।
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै।।
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै।।

बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं।।
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं।।

करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं।।
एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही।।

दो॰- पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार।।3।।

मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी।।
नाम लंकिनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहि निंदरी।।

जानेहि नहीं मरमु सठ मोरा। मोर अहार जहाँ लगि चोरा।।
मुठिका एक महा कपि हनी। रुधिर बमत धरनीं ढनमनी।।

पुनि संभारि उठी सो लंका। जोरि पानि कर बिनय ससंका।।
जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा।।

बिकल होसि तैं कपि के मारे। तब जानेसु निसिचर संघारे।।
तात मोर अति पुन्य बहूता। देखेउँ नयन राम कर दूता।।

दो॰- तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।।4।।

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।।
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही।।
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना।।

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा।।
गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं।।

सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही।।
भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा।।

दो॰- रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरषि कपिराइ।। 5।।

लंका निसिचर निकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा।।
मन महुँ तरक करै कपि लागा। तेहीं समय बिभीषनु जागा।।

राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा।।
एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी।।

बिप्र रूप धरि बचन सुनाए। सुनत बिभीषण उठि तहँ आए।।
करि प्रनाम पूँछी कुसलाई। बिप्र कहहु निज कथा बुझाई।।

की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई। मोरें हृदय प्रीति अति होई।।
की तुम्ह रामु दीन अनुरागी। आयहु मोहि करन बड़भागी।।

दो॰- तब हनुमंत कही सब राम कथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम।। 6।।

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी।।
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा। करिहहिं कृपा भानुकुल नाथा।।

तामस तनु कछु साधन नाहीं। प्रीति न पद सरोज मन माहीं।।
अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता।।

जौं रघुबीर अनुग्रह कीन्हा। तौ तुम्ह मोहि दरसु हठि दीन्हा।।
सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती। करहिं सदा सेवक पर प्रीती।।

कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचल सबहीं बिधि हीना।।
प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा।।

दो॰- अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर।। 7।।

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी। फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी।।

एहि बिधि कहत राम गुन ग्रामा। पावा अनिर्बाच्य बिश्रामा।।
पुनि सब कथा बिभीषन कही। जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही।।
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता। देखी चहउँ जानकी माता।।
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई। चलेउ पवनसुत बिदा कराई।।
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ। बन असोक सीता रह जहवाँ।।
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा। बैठेहिं बीति जात निसि जामा।।
कृस तनु सीस जटा एक बेनी। जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी।।

दो॰- निज पद नयन दिएँ मन राम पद कमल लीन।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन।। ८।।

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई। करइ बिचार करौं का भाई।।
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा। संग नारि बहु किएँ बनावा।।
बहु बिधि खल सीतहि समुझावा। साम दान भय भेद देखावा।।
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी। मंदोदरी आदि सब रानी।।
तव अनुचरीं करउँ पन मोरा। एक बार बिलोकु मम ओरा।।
तृन धरि ओट कहति बैदेही। सुमिरि अवधपति परम सनेही।।
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा। कबहुँ कि नलिनी करइ बिकासा।।
अस मन समुझु कहति जानकी। खल सुधि नहिं रघुबीर बान की।।
सठ सूनें हरि आनेहि मोहि। अधम निलज्ज लाज नहिं तोही।।

दो॰- आपुहि सुनि खद्योत सम रामहि भानु समान।
परुष बचन सुनि काढ़ि असि बोला अति खिसिआन।। ९।।

सीता तैं मम कृत अपमाना। कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना।।
नाहिं त सपदि मानु मम बानी। सुमुखि होति न त जीवन हानी।।
स्याम सरोज दाम सम सुंदर। प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर।।
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा। सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा।।
चंद्रहास हरु मम परितापं। रघुपति बिरह अनल संजातं।।
सीतल निसित बहसि बर धारा। कह सीता हरु मम दुख भारा।।

सुनत बचन पुनि मारन धावा। मयतनयाँ कहि नीति बुझावा।।
कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई। सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई।।

मास दिवस महुँ कहा न माना। तौ मैं मारबि काढ़ि कृपाना।।

दो०- भवन गयउ दसकंधर इहाँ पिसाचिनि बृंद।
सीतहि त्रास देखावहिं धरहिं रूप बहु मंद।। 10।।

त्रिजटा नाम राच्छसी एका। राम चरन रति निपुन बिबेका।।
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना।।

सपनें बानर लंका जारी। जातुधान सेना सब मारी।।
खर आरूढ़ नगन दससीसा। मुंडित सिर खंडित भुज बीसा।।

एहि बिधि सो दच्छिन दिसि जाई। लंका मनहुँ बिभीषन पाई।।
नगर फिरी रघुबीर दोहाई। तब प्रभु सीता बोलि पठाई।।

यह सपना में कहउँ पुकारी। होइहि सत्य गएँ दिन चारी।।
तासु बचन सुनि ते सब डरीं। जनकसुता के चरनन्हि परीं।।

दो०- जहँ तहँ गईं सकल तब सीता कर मन सोच।
मास दिवस बीतें मोहि मारिहि निसिचर पोच।। 11।।

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी। मातु बिपति संगिनि तैं मोरी।।
तजौं देह करु बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई।।

आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई।।
सत्य करहि मम प्रीति सयानी। सुनै को श्रवन सूल सम बानी।।

सुनत बचन पद गहि समुझाएसि। प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि।।
निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी।।

कह सीता बिधि भा प्रतिकूला। मिलहि न पावक मिटिहि न सूला।।
देखिअत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकउ तारा।।

पावकमय ससि स्रवत न आगी। मानहुँ मोहि जानि हतभागी।।
सुनहि बिनय मम बिटप असोका। सत्य नाम करु हरु मम सोका।।

नूतन किसलय अनल समाना। देहि अगिनि जनि करहि निदाना।।
देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता।।

सो०- कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ।। 12।।

तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर।।
चकित चितव मुदरी पहिचानी। हरष बिषाद हृदयँ अकुलानी।।

जीति को सकइ अजय रघुराई। माया तें असि रचि नहिं जाई।।
सीता मन बिचार कर नाना। मधुर बचन बोलेउ हनुमाना।।

रामचंद्र गुन बरनैं लागा। सुनतहिं सीता कर दुख भागा।।
लागीं सुनैं श्रवन मन लाई। आदिहु तें सब कथा सुनाई।।

श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई। कही सो प्रगट होति किन भाई।।
तब हनुमंत निकट चलि गयऊ। फिरि बैठीं मन बिसमय भयऊ।।

राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की।।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी।।

नर बानरहि संग कहु कैसें। कही कथा भइ संगति जैसें।।

दो०- कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास।। 13।।

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी।।
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुँ जलजाना।।

अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी।।
कोमलचित कृपाल रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई।।

सहज बानि सेवक सुखदायक। कबहुँक सुरति करत रघुनायक।।
कबहुँ नयन मम सीतल ताता। होइहहिं निरखि स्याम मृदु गाता।।

बचनु न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ हौं निपट बिसारी।।
देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन बिनीता।।

मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपा निकेता।।
जनि जननी मानहु जियँ ऊना। तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना।।

दो०- रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गद गद भयउ भरे बिलोचन नीर।। 14।।

कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता।।
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू। कालनिसा सम निसि ससि भानू।।

कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा।।
जे हित रहे करत तेइ पीरा। उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा।।

कहेहू तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं यह जान न कोई।।
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा।।

सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं।।
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही।।

कह कपि हृदयँ धीर धरु माता। सुमिरु राम सेवक सुखदाता।।
उर आनहु रघुपति प्रभुताई। सुनि मम बचन तजहु कदराई।।

दो॰- निसिचर निकर पतंग सम रघुपति बान कृसानु।
जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु।। 15।।

जौं रघुबीर होति सुधि पाई। करते नहिं बिलंबु रघुराई।।
राम बान रबि उएँ जानकी। तम बरूथ कहँ जातुधान की।।

अबहिं मातु मैं जाउँ लवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई।।
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा।।

निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं। तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं।।
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना। जातुधान अति भट बलवाना।।

मोरें हृदय परम संदेहा। सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा।।
कनक भूधराकार सरीरा। समर भयंकर अतिबल बीरा।।

सीता मन भरोस तब भयऊ। पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ।।

दो॰- सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हि खाइ परम लघु ब्याल।। 16।।

मन संतोष सुनत कपि बानी। भगति प्रताप तेज बल सानी।।
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना।।

अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू।।
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना। निर्भर प्रेम मगन हनुमाना।।

बार बार नाएसि पद सीसा। बोला बचन जोरि कर कीसा।।
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता। आसिष तव अमोघ बिख्याता।।
सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा।।
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुभट रजनीचर भारी।।
तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं। जौं तुम्ह सुख मानहु मन माहीं।।

दो॰- देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु।
रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु।। 17।।

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा। फल खाएसि तरु तोरैं लागा।।
रहे तहाँ बहु भट रखवारे। कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे।।
नाथ एक आवा कपि भारी। तेहिं असोक बाटिका उजारी।।
खाएसि फल अरु बिटप उपारे। रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे।।
सुनि रावन पठए भट नाना। तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना।।
सब रजनीचर कपि संघारे। गए पुकारत कछु अधमारे।।
पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा। चला संग लै सुभट अपारा।।
आवत देखि बिटप गहि तर्जा। ताहि निपाति महाधुनि गर्जा।।

दो॰- कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलएसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि।। 18।।

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना। पठएसि मेघनाद बलवाना।।
मारसि जनि सुत बांधेसु ताही। देखिअ कपिहि कहाँ कर आही।।
चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा।।
कपि देखा दारुन भट आवा। कटकटाइ गर्जा अरु धावा।।
अति बिसाल तरु एक उपारा। बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा।।
रहे महाभट ताके संगा। गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा।।
तिन्हहि निपाति ताहि सन बाजा। भिरे जुगल मानहुँ गजराजा।
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई। ताहि एक छन मुरुछा आई।।
उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभंजन जाया।।

दो॰- ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार।। 19।।

ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिं मारा। परतिहुँ बार कटकु संघारा।।
तेहिं देखा कपि मुरुछित भयऊ। नागपास बाँधेसि लै गयऊ।।

जासु नाम जपि सुनहु भवानी। भव बंधन काटहिं नर ग्यानी।।
तासु दूत कि बंध तरु आवा। प्रभु कारज लगि कपिहिं बँधावा।।

कपि बंधन सुनि निसिचर धाए। कौतुक लागि सभाँ सब आए।।
दसमुख सभा दीखि कपि जाई। कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई।।

कर जोरें सुर दिसिप बिनीता। भृकुटि बिलोकत सकल सभीता।।
देखि प्रताप न कपि मन संका। जिमि अहिगन महुँ गरुड़ असंका।।

दो॰- कपिहि बिलोकि दसानन बिहसा कहि दुर्बाद।
सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ बिषाद।। 20।।

कह लंकेस कवन तैं कीसा। केहि कें बल घालेहि बन खीसा।।
की धौं श्रवन सुनेहि नहिं मोही। देखउँ अति असंक सठ तोही।।

मारे निसिचर केहिं अपराधा। कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा।।
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासु बल बिरचति माया।।

जाकें बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा।
जा बल सीस धरत सहसानन। अंडकोस समेत गिरि कानन।।

धरइ जो बिबिध देह सुरत्राता। तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता।
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा। तेहि समेत नृप दल मद गंजा।।

खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली। बधे सकल अतुलित बलसाली।।

दो॰- जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि।। 21।।

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई। सहसबाहु सन परी लराई।।
समर बालि सन करि जसु पावा। सुनि कपि बचन बिहसि बिहरावा।।

खायउँ फल प्रभु लागी भूँखा। कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा।।
सब कें देह परम प्रिय स्वामी। मारहिं मोहि कुमारग गामी।।

जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे। तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे।।
मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा। कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा।।

बिनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन।।
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी। भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी।।

जाकें डर अति काल डेराई। जो सुर असुर चराचर खाई।।
तासों बयरु कबहुँ नहिं कीजै। मोरे कहें जानकी दीजै।।

दो०- प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु खरारि।
गएँ सरन प्रभु राखिहैं तव अपराध बिसारि।। 22।।

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राज तुम्ह करहू।।
रिषि पुलस्ति जसु बिमल मयंका। तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका।।

राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देखु बिचारि त्यागि मद मोहा।।
बसन हीन नहिं सोह सुरारी। सब भूषन भूषित बर नारी।।

राम बिमुख संपति प्रभुताई। जाइ रही पाई बिनु पाई।।
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं। बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं।।

सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी। बिमुख राम त्राता नहिं कोपी।।
संकर सहस बिष्नु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही।।

दो०- मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान।
भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान।। 23।।

जदपि कही कपि अति हित बानी। भगति बिबेक बिरति नय सानी।।
बोला बिहसि महा अभिमानी। मिला हमहि कपि गुर बड़ ग्यानी।।

मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही।।
उलटा होइहि कह हनुमाना। मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना।।

सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना।।
सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए।

नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिअ दूता।।
आन दंड कछु करिअ गोसाँई। सबहीं कहा मंत्र भल भाई।।

सुनत बिहसि बोला दसकंधर। अंग भंग करि पठइअ बंदर।।

दो०- कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ।। 24।।

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि। तब सठ निज नाथहि लइ आइहि।।
जिन्ह कै कीन्हसि बहुत बड़ाई। देखेउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई।।

बचन सुनत कपि मन मुसुकाना। भइ सहाय सारद मैं जाना।।
जातुधान सुनि रावन बचना। लागे रचौं मूढ़ सोइ रचना।।

रहा न नगर बसन घृत तेला। बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला।।
कौतुक कहँ आए पुरबासी। मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी।।

बाजहिं ढोल देहिं सब तारी। नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी।।
पावक जरत देखि हनुमंता। भयउ परम लघु रुप तुरंता।।

निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं। भई सभीत निसाचर नारीं।।

दो॰- हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग अकास।। 25।।

देह बिसाल परम हरुआई। मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई।।
जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला।।

तात मातु हा सुनिअ पुकारा। एहिं अवसर को हमहि उबारा।।
हम जो कहा यह कपि नहिं होई। बानर रुप धरें सुर कोई।।

साधु अवग्या कर फलु ऐसा। जरइ नगर अनाथ कर जैसा।।
जारा नगरु निमिष एक माहीं। एक बिभीषन कर गृह नाहीं।।

ता कर दूत अनल जेहिं सिरिजा। जरा न सो तेहि कारन गिरिजा।।
उलटि पलटि लंका सब जारी। कूदि परा पुनि सिंधु मझारी।।

दो॰- पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि।
जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि।। 26।।

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा। जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा।।
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ। हरष समेत पवनसुत लयऊ।।

कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा।।
दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।।

तात सक्रसुत कथा सुनाएहु। बान प्रताप प्रभुहि समुझाएहु।।
मास दिवस महुँ नाथु न आवा। तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा।।

कहु कपि केहि बिधि राखौं प्राना। तुम्हहू तात कहत अब जाना।।
तोहि देखि सीतलि भइ छाती। पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती।।

दो॰- जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह।
चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह।। 27।।

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी। गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी।।
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा। सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा।।

हरषे सब बिलोकि हनुमाना। नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना।।
मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा। कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा।।

मिले सकल अति भए सुखारी। तलफत मीन पाव जिमि बारी।।
चले हरषि रघुनायक पासा। पूँछत कहत नवल इतिहासा।।

तब मधुबन भीतर सब आए। अंगद संमत मधु फल खाए।।
रखवारे जब बरजन लागे। मुष्टि प्रहार हनत सब भागे।।

दो॰- जाइ पुकारे ते सब बन उजार जुबराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि करि आए प्रभु काज।। 28।।

जौं न होति सीता सुधि पाई। मधुबन के फल सकहिं कि खाई।।
एहि बिधि मन बिचार कर राजा। आइ गए कपि सहित समाजा।।

आइ सबन्हि नावा पद सीसा। मिलेउ सबन्हि अति प्रेम कपीसा।।
पूँछी कुसल कुसल पद देखी। राम कृपाँ भा काजु बिसेषी।।

नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना। राखे सकल कपिन्ह के प्राना।।
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ। कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ।

राम कपिन्ह जब आवत देखा। किएँ काजु मन हरष बिसेषा।।
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई। परे सकल कपि चरनन्हि जाई।।

दो॰- प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज।
पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देखि पद कंज।। 29।।

जामवंत कह सुनु रघुराया। जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया।।
ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर।।

सोइ बिजई बिनई गुन सागर। तासु सुजसु त्रैलोक उजागर।।

प्रभु कीं कृपा भयउ सबु काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू।।
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी। सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी।।
पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए।।

सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए।।
कहहु तात केहि भाँति जानकी। रहति करति रच्छा स्वप्रान की।।

दो०- नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहिं प्रान केहिं बाट।। 30।।

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही।।
नाथ जुगल लोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनककुमारी।।

अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारति हरना।।
मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहिं अपराध नाथ हौं त्यागी।।

अवगुन एक मोर मैं माना। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना।।
नाथ सो नयनन्हि को अपराधा। निसरत प्रान करिहिं हठि बाधा।।

बिरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वास जरइ छन माहिं सरीरा।।
नयन स्रवहि जलु निज हित लागी। जरैं न पाव देह बिरहागी।

सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला।।

दो०- निमिष निमिष करुनानिधि जाहिं कलप सम बीति।
बेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति।। 31।।

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना। भरि आए जल राजिव नयना।।
बचन कायँ मन मम गति जाही। सपनेहुँ बूझिअ बिपति कि ताही।।

कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरन भजन न होई।।
केतिक बात प्रभु जातुधान की। रिपुहि जीति आनिबी जानकी।।

सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी।।
प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा।।

सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि बिचार मन माहीं।।
पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता। लोचन नीर पुलक अति गाता।।

दो०- सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत।। 32।।

बार बार प्रभु चहइ उठावा। प्रेम मगन तेहि उठब न भावा।।
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा। सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा।।

सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर।।
कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा।।

कहु कपि रावन पालित लंका। केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका।।
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन बिगत अभिमाना।।

साखामृग कै बड़ि मनुसाई। साखा तें साखा पर जाई।।
नाघि सिंधु हाटकपुर जारा। निसिचर गन बधि बिपिन उजारा।

सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई।।

दो॰- ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल।
तब प्रभावँ बड़वानलहि जारि सकइ खलु तूल।। 33।।

नाथ भगति अति सुखदायनी। देहु कृपा करि अनपायनी।।
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी। एवमस्तु तब कहेउ भवानी।।

उमा राम सुभाउ जेहिं जाना। ताहि भजनु तजि भाव न आना।।
यह संबाद जासु उर आवा। रघुपति चरन भगति सोइ पावा।।

सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृंदा। जय जय जय कृपाल सुखकंदा।।
तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा। कहा चलैं कर करहु बनावा।।

अब बिलंबु केहि कारन कीजे। तुरत कपिन्ह कहुँ आयसु दीजे।।
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी। नभ तें भवन चले सुर हरषी।।

दो॰- कपिपति बेगि बोलाए आए जूथप जूथ।
नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ।। 34।।

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा। गर्जहिं भालु महाबल कीसा।।
देखी राम सकल कपि सेना। चितइ कृपा करि राजिव नैना।।

राम कृपा बल पाइ कपिंदा। भए पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा।।
हरषि राम तब कीन्ह पयाना। सगुन भए सुंदर सुभ नाना।।

जासु सकल मंगलमय कीती। तासु पयान सगुन यह नीती।।
प्रभु पयान जाना बैदेहीं। फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं।।

जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई। असगुन भयउ रावनहि सोई।।
चला कटकु को बरनैं पारा। गर्जहिं बानर भालु अपारा।।

नख आयुध गिरि पादपधारी। चले गगन महि इच्छाचारी।।
केहरिनाद भालु कपि करहीं। डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं।।

छं०- चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे।
मन हरष सभ गंधर्ब सुर मुनि नाग किंनर दुख टरे।।
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं।।

सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई।
गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ट कठोर सो किमि सोहई।।
रघुबीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी।
जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अबिचल पावनी।।

दो०- एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर।। 35।।

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका। जब तें जारि गयउ कपि लंका।।
निज निज गृहँ सब करहिं बिचारा। नहिं निसिचर कुल केर उबारा।।

जासु दूत बल बरनि न जाई। तेहि आएँ पुर कवन भलाई।।
दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी। मंदोदरी अधिक अकुलानी।।

रहसि जोरि कर पति पग लागी। बोली बचन नीति रस पागी।।
कंत करष हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति हित हियँ धरहु।।

समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहिं गर्भ रजनीचर धरनी।।
तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई।।

तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई।।
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें।।

दो०- राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक।।36।।

श्रवन सुनी सठ ता करि बानी। बिहसा जगत बिदित अभिमानी।।
सभय सुभाउ नारि कर साचा। मंगल महुँ भय मन अति काचा।।

जौं आवइ मर्कट कटकाई। जिअहिं बिचारे निसिचर खाई।।
कंपहिं लोकप जाकीं त्रासा। तासु नारि सभीत बड़ि हासा।।

अस कहि बिहसि ताहि उर लाई। चलेउ सभाँ ममता अधिकाई।।
मंदोदरी हृदयँ कर चिंता। भयउ कंत पर बिधि बिपरीता।।

बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई। सिंधु पार सेना सब आई।।
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू। ते सब हँसे मष्ट करि रहहू।।

जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं। नर बानर केहि लेखे माहीं।।

दो॰- सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास।।37।।

सोइ रावन कहुँ बनी सहाई। अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई।।
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा।।

पुनि सिरु नाइ बैठ निज आसन। बोला बचन पाइ अनुसासन।।
जौ कृपाल पूँछिहु मोहि बाता। मति अनुरुप कहउँ हित ताता।।

जो आपन चाहै कल्याना। सुजसु सुमति सुभ गति सुख नाना।।
सो परनारि लिलार गोसाईं। तजउ चउथि के चंद कि नाईं।।

चौदह भुवन एक पति होई। भूतद्रोह तिष्टइ नहिं सोई।।
गुन सागर नागर नर जोऊ। अलप लोभ भल कहइ न कोऊ।।

दो॰- काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत।।38।।

तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला।।
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता।।

गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिंधु मानुष तनुधारी।।
जन रंजन भंजन खल ब्राता। बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता।।

ताहि बयरु तजि नाइअ माथा। प्रनतारति भंजन रघुनाथा।।
देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही।।

सरन गएँ प्रभु ताहु न त्यागा। बिस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा।।
जासु नाम त्रय ताप नसावन। सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन।।

दो०- बार बार पद लागउँ बिनय करउँ दससीस।
परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस।।39(क)।।
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह बात।
तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात।।39(ख)।।

माल्यवंत अति सचिव सयाना। तासु बचन सुनि अति सुख माना।।
तात अनुज तव नीति बिभूषन। सो उर धरहु जो कहत बिभीषन।।

रिपु उतकरष कहत सठ दोऊ। दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ।।
माल्यवंत गृह गयउ बहोरी। कहइ बिभीषनु पुनि कर जोरी।।

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं।।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना।।

तव उर कुमति बसी बिपरीता। हित अनहित मानहु रिपु प्रीता।।
कालराति निसिचर कुल केरी। तेहि सीता पर प्रीति घनेरी।।

दो०- तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहुँ अहित न होइ तुम्हार।। 40।।

बुध पुरान श्रुति संमत बानी। कही बिभीषन नीति बखानी।।
सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई।।

जिअसि सदा सठ मोर जिआवा। रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा।।
कहसि न खल अस को जग माहीं। भुज बल जाहि जिता मैं नाहीं।।

मम पुर बसि तपसिन्ह पर प्रीती। सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती।।
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा।।

उमा संत कइ इहइ बड़ाई। मंद करत जो करइ भलाई।।
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा। रामु भजें हित नाथ तुम्हारा।।

सचिव संग लै नभ पथ गयऊ। सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ।।

दो०- रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि।
मै रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि।। 41।।

अस कहि चला बिभीषनु जबहीं। आयूहीन भए सब तबहीं।।
साधु अवग्या तुरत भवानी। कर कल्यान अखिल कै हानी।।

रावन जबहिं बिभीषन त्यागा। भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा।।
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं।।

देखिहउँ जाइ चरन जलजाता। अरुन मृदुल सेवक सुखदाता।।
जे पद परसि तरी रिषिनारी। दंडक कानन पावनकारी।।

जे पद जनकसुताँ उर लाए। कपट कुरंग संग धर धाए।।
हर उर सर सरोज पद जेई। अहोभाग्य मै देखिहउँ तेई।।

दो॰- जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि भरतु रहे मन लाइ।
ते पद आजु बिलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ।। 42।।

एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा। आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा।।
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा। जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा।।

ताहि राखि कपीस पहिं आए। समाचार सब ताहि सुनाए।।
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। आवा मिलन दसानन भाई।।

कह प्रभु सखा बूझिऐ काहा। कहइ कपीस सुनहु नरनाहा।।
जानि न जाइ निसाचर माया। कामरूप केहि कारन आया।।

भेद हमार लेन सठ आवा। राखिअ बाँधि मोहि अस भावा।।
सखा नीति तुम्ह नीकि बिचारी। मम पन सरनागत भयहारी।।

सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना। सरनागत बच्छल भगवाना।।

दो॰- सरनागत कहुँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि।
ते नर पावँर पापमय तिन्हहि बिलोकत हानि।। 43।।

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू। आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू।।
सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।।

पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजनु मोर तेहि भाव न काऊ।।
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई। मोरें सनमुख आव कि सोई।।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।
भेद लेन पठवा दससीसा। तबहुँ न कछु भय हानि कपीसा।।

जग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमिष महुँ तेते।।
जौं सभीत आवा सरनाईं। रखिहउँ ताहि प्रान की नाईं।।

दो०- उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत।
जय कृपाल कहि चले अंगद हनू समेत।। 44।।

सादर तेहि आगें करि बानर। चले जहाँ रघुपति करुनाकर।।
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता। नयनानंद दान के दाता।।

बहुरि राम छबिधाम बिलोकी। रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी।।
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन। स्यामल गात प्रनत भय मोचन।।

सिंघ कंध आयत उर सोहा। आनन अमित मदन मन मोहा।।
नयन नीर पुलकित अति गाता। मन धरि धीर कही मृदु बाता।।

नाथ दसानन कर मैं भ्राता। निसिचर बंस जनम सुरत्राता।।
सहज पापप्रिय तामस देहा। जथा उलूकहि तम पर नेहा।।

दो०- श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर।। 45।।

अस कहि करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा।।
दीन बचन सुनि प्रभु मन भावा। भुज बिसाल गहि हृदयँ लगावा।।

अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी। बोले बचन भगत भयहारी।।
कहु लंकेस सहित परिवारा। कुसल कुठाहर बास तुम्हारा।।

खल मंडली बसहु दिनु राती। सखा धरम निबहइ केहि भाँती।।
मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती। अति नय निपुन न भाव अनीती।।

बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ बिधाता।।
अब पद देखि कुसल रघुराया। जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया।।

दो०- तब लगि कुसल न जीव कहुँ सपनेहुँ मन बिश्राम।
जब लगि भजत न राम कहुँ सोक धाम तजि काम।। 46।।

तब लगि हृदयँ बसत खल नाना। लोभ मोह मच्छर मद माना।।
जब लगि उर न बसत रघुनाथा। धरें चाप सायक कटि भाथा।।

ममता तरुन तमी अँधिआरी। राग द्वेष उलूक सुखकारी।।
तब लगि बसति जीव मन माहीं। जब लगि प्रभु प्रताप रबि नाहीं।।

अब मैं कुसल मिटे भय भारे। देखि राम पद कमल तुम्हारे।।

तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला। ताहि न ब्याप त्रिबिध भव सूला।।
मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ। सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ।।
जासु रूप मुनि ध्यान न आवा। तेहिं प्रभु हरषि हृदयँ मोहि लावा।।

दो०- अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज।
देखेउँ नयन बिरंचि सिव सेब्य जुगल पद कंज।। 47।।

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ।।
जौं नर होइ चराचर द्रोही। आवे सभय सरन तकि मोही।।
तजि मद मोह कपट छल नाना। करउँ सद्य तेहि साधु समाना।।
जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुहृद परिवारा।।
सब कै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बाँध बरि डोरी।।
समदरसी इच्छा कछु नाहीं। हरष सोक भय नहिं मन माहीं।।
अस सज्जन मम उर बस कैसें। लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें।।
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें। धरउँ देह नहिं आन निहोरें।।

दो०- सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम।
ते नर प्रान समान मम जिन्ह कें द्विज पद प्रेम।। 48।।

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें। तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें।।
राम बचन सुनि बानर जूथा। सकल कहहिं जय कृपा बरूथा।।
सुनत बिभीषनु प्रभु कै बानी। नहिं अघात श्रवनामृत जानी।।
पद अंबुज गहि बारहिं बारा। हृदयँ समात न प्रेमु अपारा।।
सुनहु देव सचराचर स्वामी। प्रनतपाल उर अंतरजामी।।
उर कछु प्रथम बासना रही। प्रभु पद प्रीति सरित सो बही।।
अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा सिव मन भावनी।।
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा। मागा तुरत सिंधु कर नीरा।।
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं। मोर दरसु अमोघ जग माहीं।।
अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा।।

दो०- रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड।
जरत बिभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु अखंड।।49(क)।।

जो संपति सिव रावनहि दीन्हि दिएँ दस माथ।
सोइ संपदा बिभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ।। 49(ख)।।

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना। ते नर पसु बिनु पूँछ बिषाना।।
निज जन जानि ताहि अपनावा। प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा।।

पुनि सर्बग्य सर्ब उर बासी। सर्बरूप सब रहित उदासी।।
बोले बचन नीति प्रतिपालक। कारन मनुज दनुज कुल घालक।।

सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा।।
संकुल मकर उरग झष जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती।।

कह लंकेस सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु सोषक तव सायक।।
जद्यपि तदपि नीति असि गाई। बिनय करिअ सागर सन जाई।।

दो०- प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि।। 50।।

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई। करिअ दैव जौं होइ सहाई।।
मंत्र न यह लछिमन मन भावा। राम बचन सुनि अति दुख पावा।।

नाथ दैव कर कवन भरोसा। सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा।।
कादर मन कहुँ एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा।।

सुनत बिहसि बोले रघुबीरा। ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा।।
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिंधु समीप गए रघुराई।।

प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई।।
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए। पाछें रावन दूत पठाए।।

दो०- सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह।
प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह।। 51।।

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ। अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ।।
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने। सकल बाँधि कपीस पहिं आने।।

कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। अंग भंग करि पठवहु निसिचर।।
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए। बाँधि कटक चहु पास फिराए।।

बहु प्रकार मारन कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे।।

जो हमार हर नासा काना। तेहि कोसलाधीस कै आना।।
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए। दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए।।
रावन कर दीजहु यह पाती। लछिमन बचन बाचु कुलघाती।।

दो०- कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार।
सीता देइ मिलेहु न त आवा कालु तुम्हार।। 52।।

तुरत नाइ लछिमन पद माथा। चले दूत बरनत गुन गाथा।।
कहत राम जसु लंकाँ आए। रावन चरन सीस तिन्ह नाए।।

बिहसि दसानन पूँछी बाता। कहसि न सुक आपनि कुसलाता।।
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी।।

करत राज लंका सठ त्यागी। होइहि जव कर कीट अभागी।।
पुनि कहु भालु कीस कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई।।

जिन्ह के जीवन कर रखवारा। भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा।।
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी। जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी।।

दो०- की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर।
कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर।। 53।।

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसें। मानहु कहा क्रोध तजि तैसें।।
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा। जातहिं राम तिलक तेहि सारा।।

रावन दूत हमहि सुनि काना। कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना।।
श्रवन नासिका काटैं लागे। राम सपथ दीन्हें हम त्यागे।।

पूँछिहु नाथ राम कटकाई। बदन कोटि सत बरनि न जाई।।
नाना बरन भालु कपि धारी। बिकटानन बिसाल भयकारी।।

जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा। सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा।।
अमित नाम भट कठिन कराला। अमित नाग बल बिपुल बिसाला।।

दो०- द्विबिद मयंद नील नल अंगद गद बिकटासि।
दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि।। 54।।

ए कपि सब सुग्रीव समाना। इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना।।
राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं। तृन समान त्रैलोकहि गनहीं।।

अस मैं सुना श्रवन दसकंधर। पदुम अठारह जूथप बंदर।।
नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं। जो न तुम्हहि जीतै रन माहीं।।

परम क्रोध मीजहिं सब हाथा। आयसु पै न देहिं रघुनाथा।।
सोषहिं सिंधु सहित झष ब्याला। पूरहीं न त भरि कुधर बिसाला।।

मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा। ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा।।
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका। मानहुँ ग्रसन चहत हहिं लंका।।

दो०- सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम।
रावन काल कोटि कहुँ जीति सकहिं संग्राम।। 55।।

राम तेज बल बुधि बिपुलाई। सेष सहस सत सकहिं न गाई।।
सक सर एक सोषि सत सागर। तव भ्रातहि पूँछेउ नय नागर।।

तासु बचन सुनि सागर पाहीं। मागत पंथ कृपा मन माहीं।।
सुनत बचन बिहसा दससीसा। जौं असि मति सहाय कृत कीसा।।

सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई। सागर सन ठानी मचलाई।।
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई। रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई।।

सचिव सभीत बिभीषन जाकें। बिजय बिभूति कहाँ जग ताकें।।
सुनि खल बचन दूत रिस बाढ़ी। समय बिचारि पत्रिका काढ़ी।।

रामानुज दीन्ही यह पाती। नाथ बचाइ जुड़ावहु छाती।।
बिहसि बाम कर लीन्ही रावन। सचिव बोलि सठ लाग बचावन।।

दो०- बातन्ह मनहि रिझाइ सठ जनि घालसि कुल खीस।
राम बिरोध न उबरसि सरन बिष्नु अज ईस।। 56(क)।।
की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग।
होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग।। 56(ख)।।

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई। कहत दसानन सबहि सुनाई।।
भूमि परा कर गहत अकासा। लघु तापस कर बाग बिलासा।।

कह सुक नाथ सत्य सब बानी। समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी।।
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा। नाथ राम सन तजहु बिरोधा।।

अति कोमल रघुबीर सुभाऊ। जद्यपि अखिल लोक कर राऊ।।

मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिही। उर अपराध न एकउ धरिही।।
जनकसुता रघुनाथहि दीजे। एतना कहा मोर प्रभु कीजे।
जब तेहिं कहा देन बैदेही। चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही।।

नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ। कृपासिंधु रघुनायक जहाँ।।
करि प्रनामु निज कथा सुनाई। राम कृपाँ आपनि गति पाई।।

रिषि अगस्ति कीं साप भवानी। राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी।।
बंदि राम पद बारहिं बारा। मुनि निज आश्रम कहुँ पगु धारा।।

दो०- बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।। 57।।

लछिमन बान सरासन आनू। सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू।।
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती। सहज कृपन सन सुंदर नीती।।

ममता रत सन ग्यान कहानी। अति लोभी सन बिरति बखानी।।
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा। ऊसर बीज बएँ फल जथा।।

अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लछिमन के मन भावा।।
संधानेउ प्रभु बिसिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला।।

मकर उरग झष गन अकुलाने। जरत जंतु जलनिधि जब जाने।।
कनक थार भरि मनि गन नाना। बिप्र रूप आयउ तजि माना।।

दो०- काटेहिं पइ कदरी फरइ कोटि जतन कोउ सींच।
बिनय न मान खगेस सुनु डाटेहिं पइ नव नीच।। 58।।

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे।।
गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी।।

तव प्रेरित मायाँ उपजाए। सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए।।
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई। सो तेहि भाँति रहें सुख लहई।।

प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही। मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही।।
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।

प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई।।
प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई। करौं सो बेगि जौ तुम्हहि सोहाई।।

दो०- सुनत बिनीत बचन अति कह कृपाल मुसुकाइ।
जेहि बिधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ।।59।।

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाईं रिषि आसिष पाई।।
तिन्ह के परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे।।

मैं पुनि उर धरि प्रभुताई। करिहउँ बल अनुमान सहाई।।
एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ। जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ।।

एहिं सर मम उत्तर तट बासी। हतहु नाथ खल नर अघ रासी।।
सुनि कृपाल सागर मन पीरा। तुरतहिं हरी राम रनधीरा।।

देखि राम बल पौरुष भारी। हरषि पयोनिधि भयउ सुखारी।।
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा। चरन बंदि पाथोधि सिधावा।।

छं०- निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ।
यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ।।
सुख भवन संसय समन दवन बिषाद रघुपति गुन गना।।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना।।

दो०- सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान।।60।।

(सुंदरकांड समाप्त)

हनुमान चालीसा

शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या के दौरान अक्सर जातक का मनोबल गिरता है और अवसाद की स्थिति उत्पन्न होती है ऐसे में प्रतिदिन स्नानादि के बाद हनुमान चालीसा का पाठ करने से जातक के मनोबल का बढ़ता है और मन से अज्ञात भय दूर हो जाता है।

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिकै सुमिरौं पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनिपुत्र पवनसुत नामा।।

महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा।।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूंज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन।।

विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे।।

लाय संजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
युग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।

तुम्हरे भजन राम को भावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरिभक्त कहाई।।

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

जय जय जय हनुमान गोंसांई। कृपा करहु गुरु देव की नांई।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

शनि के दुष्प्रभाव से बचने के लिए हनुमान जी की उपासना सर्वोत्तम उपाय है जिसका एक भाग संकटमोचन हनुमानाष्टक भी है।

बाल समय रबि भक्षि लियो तब, तीनहुं लोक भयो अंधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब, छांड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि..........-1

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि..........-2

अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवित ना बचिहौं हम सों जुं, बिना सुधि लाय इहाँ पगु धारो।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब, लाय सिया सुधि प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि..........-3

रावन त्रास दई सिय को सब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि ....-4

बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो।
आनि संजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि...........-5

रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग कि फांस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि...........-6

बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पाताल सिधारो।
देविहिं पूजि भली विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि...........-7

काज किए बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहिं जात है टारो।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि...........-8

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर,
बज्र देह दानवदलन, जय जय जय कपि सूर।

बजरंग बाण

हनुमान जी की उपासना के लिए बजरंग बाण का पाठ करना तांत्रिक क्रिया का त्वरित फलदायक उपाय है।

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान।।

जय हनुमंत संत हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी।।

जन के काज बिलंब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै।।

जैसे कूदि सिंधु महिपारा। सुरसा बदन पैठि बिस्तारा।।

आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुरलोका।।

जाय बिभीषन को सुख दीन्हा। सीता निरखि परमपद लीन्हा।।

बाग उजारि सिंधु महँ बोरा। अति आतुर जमकातर तोरा।।

अक्षय कुमार मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा।।

लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपूर महँ भई।।

अब विलंब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अंतरयामी।।

जय जय लखन प्रान के दाता। आतुर होईदुख करहु निपाता।।

जै हनुमान जयति बल-सागर। सुर-समूह-समरथ भट-नागर।।

ऊँ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरिहि मारु बज्र की कीले।।

ऊँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा। ऊँ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा।।

जय अंजनि कुमार बलवंता। शंकरसुवन बीर हनुमंता।।

बदन कराल काल-कुल-घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक।।

भूत, प्रेत, पिसाच निसाचर। अगिन बेताल काल मारी मर।।

इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की।।
सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै। राम दूत धरु मारु धाइ कै।।
जय जय जय हनुमंत अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा।।
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत कछु दास तुम्हारा।।
बन उपबन मग गिरि गृह माहीं। तुम्हरें बल हौं डरपत नाहीं।।
जनकसुता हरि दास कहावौ। ताकी सपथ बिलंब न लावौ।।
जै जै जै धुनि होत अकासा। सुमिरत होय दुसह दुख नासा।।
चरन पकरि, कर जोरि मनावौं। यहि औसर अब केहि गोहरावौं।।
उठु, उठु, चलु, तोहि राम दुहाई। पायँ परौं, कर जोरि मनाई।।
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता। ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता।।
ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल। ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल।।
अपने जन को तुरत उबारौ। सुमिरत होय आनंद हमारौ।।
यह बजरंग-बाण जेहि मारै। ताहि कहौ फिरि कवन उबारै।।
पाठ करै बजरंग-बाण की। हनुमत रक्षा करै प्रान की।।
यह बजरंग बाण जो जापैं। तासों भूत-प्रेत सब कापैं।।
धूप देय जो जपै हमेसा। ताके तन नहिं रहै कलेसा।।

उर प्रतीति दृढ़, सरन ह्वै, पाठ करै धरि ध्यान।
बाधा सब हर, करैं सब काम सफल हनुमान।।

आरती श्री हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।

जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झांकै।।

अंजनी पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।

दे बीड़ा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये।।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई।जात पवनसुत बार न लाई।।

लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे।।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संज़ीवन प्रान उबारे।।

पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावण की भुजा उखारे।।

बायें भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।।

सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारें।।

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।

जो हनुमान जी की आरती गावै।
बसि बैकुण्ठ परमपद पावै।।

श्री हनुमत्-वन्दना

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।